स्वास्थ्य और आर्थिक स्वावलम्बन से जुड़े हमारा हरीतिमा संवर्धन अभियान 2

3 गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे वृक्षारोपण के कुछ आदर्श प्रयोग

6 मानवीय जीवन की यात्रा का तत्त्वदर्शन है श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा

8 **गायत्री जयन्ती** संसार को नए सिरे से बनाना हो तो गायत्री से बढ़कर कुछ नहीं

8 भारत सरकार ने शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती पर जारी किया डाक टिकट

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 जुलाई 2021

वर्ष : 34, अंक : 01

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : ..... 27 जून 2021

वार्षिक चंदा : ....₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-

प्रति अंक : .....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

बदलते युग के अनुरूप स्वयं को ढालने में ही समझदारी है

चल रहा है देवासुर संग्राम

युग परिवर्तन की पुण्य वेला तीव्र वेग से उगती चली आ रही है। जिन्हें हमारे ऊपर विश्वास हो उन्हें इतना तो नोट कर ही लेना चाहिये कि अगले दिनों घटनाक्रम इतनी तेजी के घूमेगा और उसकी प्रतिक्रिया इतनी अद्भुत होगी कि आज का वैयक्तिक जीवन-क्रम और समाज का स्वरूप लड़खड़ा कर औंधे मुँह गिर पड़ेगा। उसके स्थान पर जो नई जीवन पद्धति और विधि व्यवस्था सामने आयेगी, उसका आज के सड़ियल ढर्रे से कोई तालमेल न होगा। आज की वैयक्तिक जीवन पद्धति और समाज की परिपाटी कुछ ही दिनों में इतनी अधिक बदल जायगी कि परिवर्तन से पूर्व और पश्चात् की तुलना करने वालों को स्तब्ध-अवाक् रह जाना पड़ेगा।

अगले दिन प्रसव पीड़ा जैसे हैं। इसमें भारी उथल-पुथल होगी और ऐसे संघर्ष होंगे, जिनकी तुलना पौराणिक समुद्र-मंथन से की जा सकती है। असुर रस्सी को अपनी ओर खींचते थे-देवता अपनी ओर। इस खींचतान की प्रतिक्रिया अन्ततः शुभ ही हुई। 14 रत्न निकले और उससे धरती से लेकर स्वर्ग तक की गरिमा असाधारण रूप से बढ़ गई। इसी प्रकार का प्रस्तुत युग मंथन भी है। इन दिनों के संघर्ष का लाभ उठाने के लिए असुरता अपनी घात लगायेगी और देवत्व भी अपने परिपोषण की दिशा में उसे खींचेगें।

युगद्रष्टा का आश्वासन

समुद्र मंथन के अन्तिम परिणाम के बारे में किसी को भी संदिग्ध नहीं रहना चाहिए। भगवान् ने कच्छप रूप धारण करके मंदराचल को भूमि में धंस जाने से रोका था, भगवान शंकर ने विषपान किया था। सूर्य और विष्णु ने मिलकर राहु-केतु की दुरभिसंधि को निष्फल किया था। ऐसे ही प्रकरण वर्तमान युग-संघर्ष में प्रस्तुत होंगे। उतार-चढ़ाव की परिस्थितियाँ रंग बदलती रहेंगी, पर चूंकि यह विशाल अभियान ईश्वरीय प्रेरणा और इच्छा के अनुरूप चल रहा है, उसमें स्फुरणा और मार्गदर्शन सूक्ष्म जगत के प्रकाश केन्द्र से आ रहा है, महाकाल उसका संचालन एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया के अनुरूप कर रहा है, इसलिए इसके असफल होने का कोई कारण नहीं है। यह आशंका भी नहीं है कि उसकी प्रतिक्रिया असुरता की दृष्टि में उल्टी हो जायेगी।

दश अवतारों का प्रकरण जब उलटते हैं तो यही प्रतीत होता है कि जब-जब देवत्व लड़खड़ाया है तब उसकी सहायता के लिये कोई अनोखा प्रकाश कहीं से उगा और उसने असम्भव को सम्भव के रूप में परिणत कर दिया। अगले दिनों भी कुछ ऐसे ही चमत्कार प्रस्तुत हों, तो उसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं समझी जानी चाहिए।

संघर्ष विचारधाराओं का

वर्तमान में सेनाओं का युद्ध गौण और विचारधाराओं का टकराना मुख्य होगा। अब किलों पर कब्जा करने वाली बात प्रमुख नहीं रहेगी। महत्त्वपूर्ण यह होगा कि जनमानस पर कौन-सी विचारधारा आच्छादित होती है। भावी संघर्ष का-भावी महाभारत का स्वरूप प्रदेशों पर कब्जा करना नहीं, विचारधाराओं के दबाने और उभारने के रूप में परिलक्षित होगा। विचार ही इस संघर्ष के प्रधान उपकरण, प्रचार साधन होंगे। जिसके पास जितना समर्थ प्रचार-तन्त्र होगा, वह उतनी ही सबलता, समर्थता प्रकट करेगा।

जर्मनी में हिटलर ने ऐसी ही एक झलक प्रस्तुत की थी उसने अपने देश के समस्त प्रचार तन्त्र को हस्तगत करके जन-मानस को इस चतुरता से ढाला और मोड़ा था कि जर्मन जाति विश्व के लिये एक सबसे बड़ी समस्या बन गई थी। यह प्रयोग भविष्य में और भी तीव्रगति से प्रचुर परिमाण से प्रस्तुत होंगे।

वर्तमान युग की परिस्थिति को समझने वाले प्रचार साधनों को हथियाने और उनका उपयोग असुरता अथवा दिव्यता की अभिवृद्धि -परिपुष्टि के लिए कर रहे हैं। सिनेमा, रेडियो, प्रेस, साहित्य, प्रवचन, प्रदर्शन आदि अगणित माध्यम इस सन्दर्भ में उदित हो चुके हैं और उससे अनेक गुने आगे होने वाले हैं। यही भावी महाभारत की चतुरंगिणी होगी। इन साधनों से प्रभावित व्यक्ति अपने समीपवर्ती वातावरण के जनसमूह को प्रभावित करने के लिये व्यक्तिगत रूप से पुरुषार्थ और संघर्ष करेंगे। वह समुद्र मंथन इतना व्यापक हो जायगा कि उसकी चपेट-लपेट से प्रभावित हुए बिना संसार का एक भी व्यक्ति न रह सकेगा।

सारे विश्व को प्रभावित करेगी हमारी युग निर्माण योजना

अतीत में जब कभी भी भावनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया गतिशील हुई है तो उसका संचालन भारत भूमि से ही हुआ है। जिस विश्वव्यापी महान परिवर्तन की वेला इन दिनों सामने खड़ी है उसका उद्भव एवं संचालन भी इसी भूमि से होना है, सो हो भी रहा है । युग-निर्माण योजना का ज्ञानयज्ञ, विचार क्रान्ति अभियान, जिसके साथ बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक परिवर्तनों की सुसंबद्ध शृंखला जुड़ी हुई हैं, इसी भारत भूमि से गतिशील हो रहा है। कहना न होगा कि अगले दिनों यह बीज विशाल वटवृक्ष का रूप धारण करेगा।

अभी यह आरम्भ हिन्दू-धर्म और भारत भूमि से ही हो रहा है। समय के साथ-साथ यह संसार के हर देश तथा हर धर्म तक व्यापक-विस्तृत होता चला जायेगा। नवयुग का सूर्य भारत तक चमक कर न रह जायेगा। इसका उदय पूर्व में हो रहा है, पर समयानुसार विश्व के हर कोने में इसकी प्रभा किरणें फैलेंगी और वर्तमान अन्ध तमिस्रा का निराकरण करके ही रहेंगी।

हारिये न हिम्मत

दश अवतारों का प्रकरण जब उलटते हैं तो यही प्रतीत होता है कि जब-जब देवत्व लड़खड़ाया है तब उसकी सहायता के लिये कोई अनोखा प्रकाश कहीं से उगा और उसने असम्भव को सम्भव के रूप में परिणित कर दिया। अगले दिनों भी कुछ ऐसे ही चमत्कार प्रस्तुत हों, तो उसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं समझी जानी चाहिए।

समय के साथ चलें, समझदार बनें

हम में से प्रत्येक प्रबुद्ध और विचारशील व्यक्ति को अपना मन-मस्तिष्क इन भावी सम्भावनाओं के अनुकूल ढालने की तैयारी में अभी से लग जाना चाहिए, ताकि समय आने पर वह उलट-पलट अखरे नहीं। जो पहले से ही अनुकूल हो जायेंगे, वे तूफानी प्रवाह के साथ बह चलने की सुविधा अनुभव करेंगे, किन्तु जिन्होंने प्रतिरोधी एवं प्रतिगामी मान्यताओं में अपने को जकड़े रखा उन्हें भारी अड़चन, व्यथा, प्रतिकूलता और विपत्ति का अनुभव होगा।

परिवर्तन का प्रवाह रुकने वाला नहीं है। ईश्वर का निर्देश और महाकाल का प्रत्यावर्तन रोक सकना तुच्छ मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है इसलिये बुद्धिमता इसी में है कि हम ऋतु परिवर्तन के साथ वस्त्र, रहन-सहन आदि की तरह युग परिवर्तन के अवसर पर भी अपने चिन्तन, कर्तृत्व और अभ्यास को भी बदल डालें। सुविधा-सरलता इसी में रहेगी।

युग परिवर्तन की दिशा-धारा

भावी युग निर्माण के मूलभूत चार आधार, तथ्य एवं आदर्श होंगे। वे हैं-

1. धन पर समाज का स्वामित्व, व्यक्तिगत सम्पदा का अन्त होगा।
2. जाति और लिंग के नाम पर बरती जाने वाली असमानता का अन्त और मनुष्य मात्र के समान नागरिक अधिकारों की प्रतिष्ठापना।
3. विश्व बन्धुत्व की मान्यता। प्रत्येक क्रिया-पद्धति में सहकारिता का, कौटुम्बिकता की प्रवृत्ति का प्राधान्य। विश्व राष्ट्र की स्थापना-समस्त संसार का एक शासन, एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा, एक आचार आदि एक्य सूत्रों का सार्वभौम प्रचलन।
4. व्यक्तिवाद का अन्त, समूहवाद का उदय। अधिकार की उपेक्षा और कर्तव्य की निष्ठा, तत्परता, उदारता और सज्जनता की मात्रानुसार मानवीय गरिमा का मूल्यांकन।

इन्हीं आधार एवं सिद्धान्तों पर व्यक्ति के अधिकार एवं कर्त्तव्य निर्धारित किये जायेंगे। प्रथा परम्परा, कानून एवं आचरण इन्हीं सिद्धान्त पर खड़े किये जायेंगे। समाज का स्वरूप, शासन का ढाँचा इन्हीं प्रयोजनों की पूर्ति के लिए विनिर्मित होगा।

नवयुग इन्हीं आधारों को मूर्तिमान करने के लिए द्रुतगति से दौड़ता चला आ रहा है। समय की गति को पहचानना ही काफी नहीं, उसके अनुरूप ढलना भी आवश्यक है। सम्भव हो तो मानव में देवत्व का उदय कर सकने और धरती पर स्वर्ग का सृजन कर सकने में समर्थ इस दिव्य अवतरण का स्वागत-सत्कार करने के लिए हमें अर्घ्य, आरती लेकर आगे बढ़ चलने का भी साहस एकत्रित करना चाहिए।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, वाङ्मय खण्ड-28 (सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-1) पृष्ठ 6.44-6.46 से संकलित, सम्पादित)

सम्पादकीय

स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्वावलम्बन से जुड़े हमारा हरीतिमा संवर्धन अभियान
इससे शहरों का मोटापा भी घटेगा और गाँव बनेंगे नन्दन वन

पर्यावरण संरक्षण और हरीतिमा संवर्धन अपने मिशन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण आन्दोलन है। जन्मशताब्दी वर्ष-2011 से इसे एक क्रान्तिकारी रूप देकर समाज के समक्ष अनेक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किए हैं। तरुपुत्र-तरुमित्र महायज्ञों से लेकर श्रीराम स्मृति उपवन, ग्रह-नक्षत्र वाटिकाएँ और अनेक योजनाओं के माध्यम से जन-जन की भावनाएँ जगाई गईं और हर वर्ष लाखों की संख्या में वृक्ष लगाए गए।

हज़ार पेड़ों का बाग लगाने वाले हज़ारी किसान का दृष्टांत आज भी दिया जाता है, लेकिन गायत्री परिवार ने किसी सरकारी योजना या सहायता से नहीं, बल्कि सामाजिक संवदेना, निजी श्रद्धा-उत्साह तथा अपनी गुरुसत्ता के प्रति समर्पण भाव के सहारे हरीतिमा संवर्धन के लिए जो कार्य किया है वह उससे भी हज़ारों गुना अधिक है। मध्य प्रदेश में बुरहानपुर के श्री मनोज तिवारी के मार्गदर्शन में 250 से ज्यादा पहाड़ियाँ हरीभरी हो गईं। गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता पिछले 11 वर्षों से अनवरत वृक्षारोपण का कार्य करते हुए अब तक एक लाख साठ हज़ार से भी अधिक पेड़ लगा चुका है। औरंगाबाद, महाराष्ट्र में श्री राजेश टांक द्वारा गोलेगाँव में वृक्षारोपण और नगर में तुलसी व औषधीय पौधों के वितरण का जो आदर्श प्रस्तुत किया जा रहा है उससे प्रशासन और पूरा क्षेत्र गद्‌गद है। दिया, राजस्थान ने पूरे प्रदेश में रविवासरीय पंचवटी रोपण अभियान चला रखा है। पिछले दो-तीन वर्षों से वड़ोदरा, अहमदाबाद, दिल्ली जैसे अनेक क्षेत्रों में नियमित वृक्षारोपण का अत्यंत सफल-उत्साहवर्धक क्रम आरम्भ हुआ है जो सराहनीय व अनुकरणीय है।

अभी नहीं तो कभी नहीं

बढ़ते पर्यावरण संकट से आज कौन परिचित नहीं है? गली-मोहल्लों से लेकर हाल ही में सम्पन्न हुए जी-7 जैसी विश्व स्तरीय बैठकों का प्रमुख विषय है पर्यावरण संकट। सामान्य भाषा में कहें तो ऑक्सीजन की कमी का क्या परिणाम होता है यह भारत ने कोरोना संकट की दूसरी लहर में अच्छी तरह अनुभव कर लिया है। यह तो प्रत्यक्ष आवश्यकता थी, लेकिन शहरों की दम घोटू हवा से करोड़ों लोग हर वर्ष फेफड़ों से सम्बन्धित एवं अन्य जानलेवा बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। वे तिल-तिलकर मरते हैं, अपनी गाढ़ी कमाई दवाई-अस्पतालों में खर्च करते रहते हैं। इसके समाधान के लिए सबसे जरूरी है-जीते-जागते विषपायी शिव अर्थात् 'पेड़' बड़ी संख्या में लगाए जायें। वे ही हैं जो वातावरण का ज़हर-कार्बन डाईऑक्साइड गैस पीकर बदले में अमृतस्वरूप ऑक्सीजन देते हैं। धरती पर जीवन को बचाये रखना है तो उसे हरियाली की चादर ओढ़ानी ही होगी।

धरती की गरमी बढ़ने (ग्लोबल वॉर्मिंग) की समस्या इतनी विकराल है कि यदि इस पर तुरन्त नियन्त्रण स्थापित नहीं किया गया तो पर्यावरणविदों का मानना है कि आने वाले एक-दो दशक में ही भारत के सैकड़ों शहरों में पानी का नामोनिशान नहीं बचेगा। इसकी शुरुआत हो भी चुकी है। कई शहरों में पीने के लिए भी पानी उपलब्ध नहीं रहा। इसके लिए जल संरक्षण के उपाय तो करने ही होंगे, लेकिन पानी को धरती में सोखने-रोकने और आसमान की मेघमालाओं को आकर्षित करने के लिए वृक्षों की आवश्यकता भी है।

धरती का तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि तापमान बढ़ने का क्रम यही रहा तो हममें से बहुत से लोग मुम्बई, चेन्नई, न्यूयॉर्क, शंघाई जैसे बड़े-बड़े शहरों को सदा के लिए जलमग्न होते अपनी आँखों से देख सकते हैं। वर्ष दर वर्ष बढ़ते तूफान, बाढ़, सूखा; सब घटते वन, बढ़ती गरमी का ही परिणाम हैं। वर्तमान कोरोना संकट में लगभग हर व्यक्ति ने अपने परिवारीजनों को खोन, बीमारी, बेरोज़गारी व अन्य परेशानियों का दंश झेला है। यदि हम आज नहीं चेते तो वह दिन दूर नहीं जब पर्यावरण प्रदूषण के कारण अपनों को और अपने बच्चों को इससे भी बुरी हालत में कष्ट झेलते हुए देखने के लिए विवश होंगे।

मनुष्य का जीवन वृक्ष-वनस्पतियों पर ही तो टिका है। जीने के लिए प्राणवायु और जल के अलावा भोजन, फल-मेवे आदि पौष्टिक आहार, दवाइयाँ, आवास, फर्नीचर, कागज़, कपड़ा आदि का स्रोत वृक्ष-वनस्पतियाँ हैं। यदि हम वृक्ष नहीं लगायेंगे, वन नहीं बढ़ायेंगे तो दुनिया की कोई भी सरकार, कोई भी प्रशासन हमें आसन्न संकट से नहीं बचा सकती। इसलिए आज की नहीं, दूर की सोचें। अपनी नहीं, आनेवाली पीढ़ियों की भी सोचें। जितना हो सके, जैसे हो सके हरियाली बढ़ायें, प्रदूषण घटायें। यदि हम आज नहीं चेते तो आने वाले दिनों में हमें अपनी भूल सुधारने का अवसर शायद मिले, न मिले।

गाँव बनें नन्दन वन

अभी तक अखिल विश्व गायत्री परिवार ने वृक्षारोपण को आस्था के विभिन्न आयामों से जोड़कर हरीतिमा संवर्धन अभियान में असाधारण सफलता पाई है। धर्म प्रधान भारत देश में अच्छाइयों के पुण्य प्रसार का यही सर्वोत्तम उपाय है। हमने कई योजनाएँ चलाईं, जिनका एकमात्र लक्ष्य था हरीमिता संवर्धन। लेकिन अब सामाजिक आवश्यकता, उपयोगिता और समस्याओं को देखते हुए हमें कुछ और उपायों का भी चिन्तन करना चाहिए।

कोरोना संक्रमण काल ने देश में 'स्वास्थ्य और रोज़गार' को बहुत ज्यादा प्रभावित किया है। आने वाले दिनों में यह संकट बढ़ भी सकता है। ऐसे में हमें हर गाँव को स्वास्थ्य और रोज़गार की दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने पर ध्यान देना होगा। यह सामूहिक प्रयासों से ही संभव हो सकता है।

स्वास्थ्य : कोरोना संक्रमण काल में जीवनी शक्तिवर्धक काढ़े के सेवन का प्रचलन खूब बढ़ा। यह प्रयोग सामान्य दिनों में भी सर्दी, खांसी, फ्लू जैसे अनेक रोगों से बचा सकता है। इसके लिए आवश्यक औषधियाँ पर्याप्त मात्रा में गाँव-मुहल्लों में ही उपलब्ध हों तो परिणाम बेहतर होते हैं। क्यों न अपने गाँव में सामूहिक उपयोग के लिए तुलसी, अदरक, आज्ञाघास, जवारे, करेले, गिलोय, चिरायता, कालमेघ, वासा, ग्वारपाठा जैसी दैनंदिन उपयोग की और घरेलू चिकित्सा में उपयोगी जड़ी-बूटियाँ उगाई जायें, गाँव के अपने हर्बल मेडिसिन पार्क हों। यदि एक स्थान पर संभव नहीं तो अलग-अलग घरों के आँगन में, छतों पर, खाली पड़ी जमीन पर उन्हें उगाया जाय। उनके आधार पर सामान्य चिकित्सा की घरेलू व्यवस्था बन जाये तो उससे बाजार की महगी दवाइयों के खर्च और उनके दुष्परिणामों से बचा जा सकता है।

सुपोषण : कुपोषण अपने देश की बहुत बड़ी समस्या है। इसके निवारण के लिए केन्द्र सरकार ने इस वर्ष विशेष अभियान भी चलाया है। क्यों न हर गाँव अपनी ओर से इस दिशा में प्रयास करे। सहजन की फली, पत्ते, फूल आदि कैल्शियम, विटामिन, लौह तत्त्व से भरपूर होते हैं। इसके अलावा आँवला, नीबू, संतरा, मीठी नीम जैसे अनेक पौधे हैं जिनमें पोषक तत्त्वों का भण्डार होता है। हर गाँव में आवश्यकता के अनुरूप ऐसे पौधे और वनौषधियाँ उपलब्ध होने ही चाहिए।

सब्जियाँ : इन दिनों कम पैसे में अधिक मुनाफा कमाने की होड़ में अनाज और सब्जियाँ भी रासायनिक खाद, कीटनाशकों के कारण ज़हरीली होती जा रही हैं। इन्हें यदि सहकारिता के आधार पर अपने गाँव के उपयोग के लिए ही उगाया जाने लगे तो पूरे गाँव की स्वास्थ्य रक्षा होगी और मँहगाई से भी राहत मिलेगी।

छत और गमलों में सब्ज़ियों की खेती

आजकल नई तकनीकों से घर की छतों पर गमलों में भी सब्ज़ियों की शानदार खेती होने लगी है। गायत्री परिवार द्वारा शान्तिकुञ्ज सहित कई स्थानों पर इस सम्बन्ध में बहुत अच्छे और प्रेरणादायी प्रयोग हुए हैं। युवाओं का भी इस तकनीक की ओर रुझान बढ़ रहा है, जिसके समाचार आये दिन पढ़ने को मिलते हैं। हर मौसम में गमलों में खेती न केवल घर की ज़रूरतों को पूरा करने में समर्थ है, बल्कि आय का अच्छा स्रोत भी बनती जा रही है।

स्वास्थ्य पार्क : जगह-जगह पेड़ लगाये जाते हैं यह सच है, लेकिन हर गाँव का नीम, पीपल, बरगद, आम, जामुन, बेल जैसे फलदार और सुगंधित फूलों वाले पौधों का एक ऐसा स्वास्थ्य उद्यान भी होना चाहिए जहाँ गाँववाले जाकर प्रातः भ्रमण, योग-व्यायाम-प्राणायाम करने में आनन्द की अनुभूति करें। बच्चों के खेलने के लिए व्यवस्थित स्थान हो।

जल संरक्षण के लिए : बहते वर्षाजल को रोकने की दृष्टि से भी वृक्षारोपण पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। प्रज्ञा अभियान के विगत अंकों में जल संरक्षण के लिए बनाई जाने वाली अनेक संरचनाओं की जानकारी दी गई है। अपने क्षेत्र के लिए उपयोगी संरचना का चयन कर उस पर कार्य किया जाये तो कुछ ही वर्षों में गाँव का जलस्तर ऊपर उठने लगेगा। गायत्री परिवार ने इसी प्रकार वृक्षारोपण करते हुए कई नदियों को पुनर्जीवित किया है और इस दिशा में प्रयास और भी तेज हो रहे हैं।

किसानों से निवेदन : खेती की नई-नई तकनीकें विकसित हो रही हैं। उनका सही-सही उपयोग होने लगे तो खेती भी बेहतर मुनाफा दे सकती है। **मियावाकी तकनीक** में छोटे पौधे, झाड़ियाँ और वृक्षों का इस प्रकार से रोपण किया जाता है कि वे एक-दूसरे की पैदावार को बढ़ाते हैं जो पर्यावरण और आर्थिक दोनों दृष्टि से लाभदायक है। नियमित फसल के साथ अपने खेत के कुछ भाग में फलदार वृक्ष अथवा जड़ी-बूटियाँ लगाकर बेहतर लाभ लेने की सोची जा सकती है। तरह-तरह के फलदार या जड़ी-बूटी वाले उपयोगी उद्यान लगाये जा सकते हैं जो न केवल गाँव की जरूरतों को पूरी करें, बल्कि आय का साधन भी बनें।

इस आलेख का लेखक कृषि या वानिकी का विशेषज्ञ तो नहीं है, लेकिन सहकारिता और सूझबूझ के परिणाम सदा बेहतर ही होते हैं। समाचार पत्रों में ऐसे उदाहरण आए दिन पढ़ने को मिलते हैं। हम सबको मिलकर पर्यावरण सुधार एवं सामाजिक प्रगति के लिए ऐसे प्रयास करने चाहिए।

सहकारी समितियाँ

गायत्री परिवार ने अपने संगठन के आधार पर लोगों को व्यक्तिगत रूप से वृक्षारोपण के लिए खूब प्रेरित और संकल्पित किया है। लेकिन बेहतर सफलता के लिए और गाँव की अपनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए योजनाबद्ध वृक्षारोपण करना हो तो यह कार्य सहकारी स्तर पर ही संभव है। गाँव के सरपंच, पंच एवं विषय विशेषज्ञ व्यक्ति जब मिलकर काम करेंगे तो उपलब्ध स्थान का, शासकीय सहयोग का, तकनीकी मार्गदर्शन का बेहतर उपयोग हो सकेगा। सहकारी स्तर पर वन-उपवनों की बेहतर सुरक्षा होगी ओर गाँववालों के परस्पर हित सधेंगे। हमें इस दिशा में प्रयोगात्मक प्रयास आरम्भ कर देने चाहिए।

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन

यह शान्तिकुञ्ज की स्थापना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है। हरीतिमा संवर्धन अभियान के अन्तर्गत इस वर्ष 'शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन' और 'श्रीराम स्मृति उपवन' की स्थापना पर विशेष बल दिया जा रहा है। आइये अपने अभियान के साथ समाज का सशक्त मार्गदर्शन करें और अपने अभियान को गति दें।

सहकारिता पर आधारित है पर्यावरण सम्बन्धी समस्या का समाधान और गाँवों का समग्र उत्थान

परम पूज्य गुरुदेव ने आज की अनेक समस्याओं का कारण शहरों के बढ़ते मोटापे और वीरान व उपेक्षित होते जा रहे गाँवों को बताया है। यदि सहकारिता एवं सूझबूझ के साथ गाँवों में वृक्षारोपण, वानिकी व कृषि को बढ़ाया जाय तो स्थिति को बदला जा सकता है। इसके लाभ होंगे-

- गाँवों की खाली पड़ी जमीन का सदुपयोग होने लगेगा। केवल मैदानी ही नहीं, बल्कि गली-कूँचों की वह जमीन जहाँ आज गंदगी के ढेर रहते हैं, उनका उपयोग होने लगेगा, स्वच्छता बढ़ेगी।
- उपयोग किये गये पानी के सही निस्तारण की योजनाएँ बन सकती हैं।
- निरर्थक फैंक दी जाने वाली वस्तुएँ-टूटे ड्रम, पीपे, प्लास्टिक के डिब्बे, थैलियाँ जैसी चीजों को पौधे लगाने के काम में लिया जा सकता है।
- हरियाली बढ़ेगी तो गाँव का जल स्तर बढ़ेगा। देश के अनेक गाँवों में ऐसे प्रयोग हो चुके हैं, जिनके आधार पर गाँववासियों की आय कई गुना बढ़ गई।
- गोबर, कचरा आदि से खाद बनाकर उसका उपयोग किया जा सकता है।
- छोटी-छोटी फूड प्रोसेसिंग यूनिटें तैयार हो सकती हैं।
- गाँववालों को जैविक खेती पर आधारित रासायनिक ज़हर से रहित पौष्टिक आहार मिलेगा।

यह सब सामूहिक प्रयासों से ही संभव है, जिसमें श्रमिकों का सहयोग लेना ही होगा। यदि अपने गाँव-क्षेत्र में ही रोजगार बढ़ने लगे तो शहरों की ओर पलायन तो रुकेगा ही।

जो ईश्वर को जानते हैं, वे नम्र होते हैं। परन्तु जो अपने को जानते हैं, वे भी अभिमानी नहीं हो सकते।

वृक्षगंगा अभियान

गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे कुछ आदर्श प्रयोग

8 वर्षों में हरीभरी हो गई 'संकल्प पहाड़ी'

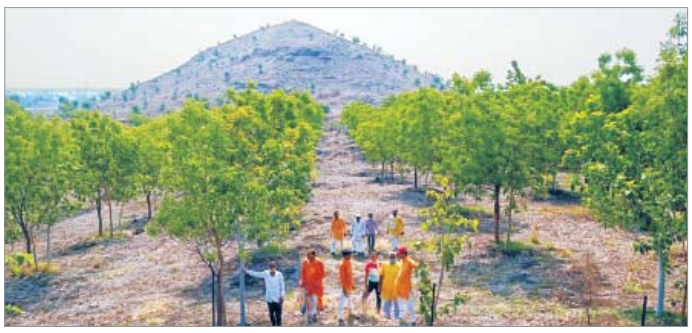

5 लाख रुपये लागत, पूर्ण विकसित हैं 1500 पेड़

कसरावद, खरगोन। म.प्र.

कसरावद शाखा ने वर्ष 2013 में गवला रोड़ स्थित प्रसिद्ध ईटई बैड़ी पर जन सहयोग से 108 त्रिवेणियों सहित 1500 से अधिक रोपित किए थे। आज वे सारे पौधे पेड़ बन चुके हैं। जो पहाड़ी कभी पूरी तरह विरान थी वह आम, जामुन, आंवला, अंजन, करंज, शीशम, सप्तपर्णी, शिवलिंगी, कटहल, सागौन, सुरजना, केजरीना, अमलतास, गुलमोहर, अर्जुन, खिरनी, गिलोय, बिल्वपत्र, बांस, कदंब, पलास आदि प्रजातियों के पेड़ों से हरीभरी हो चुकी है। गायत्री परिवार ने इसे नाम दिया है-'संकल्प पहाड़ी'।

संकल्प पहाड़ी : तहसील संयोजक संजय शर्मा बताते हैं कि अपने वृक्षों को ही अपना जीवंत स्मारक मानते थे। उनकी अभिलाषा के अनुसार यह संकल्प पहाड़ी-श्रीराम स्मृति उपवन उनके पावन स्मारक के रूप में ही विकसित किया गया है।

गायत्री परिवार के भाई-बहनों ने अपने पसीने की बूँदों से सींचकर प्रत्येक पेड़ को पाला-पोसा है। वे पास के तालाब से स्वयं मिट्टी खोदकर अपने सिर ढोकर लाये, गड्ढों में डाली। सुरक्षा हेतु पहाड़ी के चारों ओर तार फेंसिंग करवाई। सिंचाई के लिए ड्रिप लाईन बिछाई। पूरी तरह से जनसहयोग जुटाकर ₹5 लाख के खर्च से उपवन का निर्माण किया। निराई-गुड़ाई व थाँवले बनाने के लिए समय-समय पर समयदान किया।

श्रीमती माधुरी मोहन मुकाती एवं अध्यापक सुरेश यादव ने बताया कि हरीतिमा संवर्धन गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार का एक महती अभियान है। इसके तहत नगर सहित गायत्री परिवार द्वारा तहसील के ग्राम बामंदी, ओझरा, रूपखेड़ा, खामखेड़ा व दुगार्पुर में भी अत्यंत मनोरम 'श्रीराम स्मृति उपवन' तैयार किए गए हैं।

'ग्रीन मैन' श्री हीरालाल कुशवाह

अपने खेत में निजी खर्च से बनाया उपवन पूर्ण विकसित हैं लगाए गए 398 पेड़

गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता एवं सेवानिवृत्त सहकारी बैंक अधिकारी श्री हीरालाल कुशवाह ने आज से पाँच वर्ष पूर्व अपनी पेंशन की राशि से निजी खेत में 65 वें जन्मदिन पर 65 त्रिवेणियाँ लगाई थीं। इनके अलावा खेत की मेड़ पर कुल 398 पौधे भी रोपे थे। श्री कुशवाह जी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कमला कुशवाह के साथ रात दिन बच्चों की तरह पौधों की देखभाल की। हरीतिमा के प्रति उनके लगाव और अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप बहुत सुन्दर उपवन तैयार कर दिखाया जो पूरे नगर में आकर्षण एवं चर्चा का विषय बना हुआ है। उनके भागीरथी प्रयासों से आमजन को भी पौधारोपण की प्रेरणा मिल रही है।

'दिया' राजस्थान का पंचवटी वृक्षारोपण अभियान

बाराँ। राजस्थान

राजस्थान प्रान्त के युवा प्रकोष्ठ-दिया (दिव्य भारत युवा संघ) ने विगत गुरुपूर्णिमा (5जुलाई 2020) से 'पंचवटी वृक्षारोपण अभियान' का शुभारंभ किया था। इसके अन्तर्गत सांस्कृतिक, धार्मिक महत्त्व के दीर्घजीवी वृक्षों बरगद, पीपल, अशोक, नीम/आँवला, बेल के पौधे पूरे प्रदेश में रोपे जा रहे हैं। स्थानीय स्तर पर इनकी अनुपलब्धता होने पर अन्य वृक्ष भी लगाये जा रहे हैं। योजना में पौधा रोपण के साथ पुराने पौधों को पानी देना, ट्री-गार्ड आदि से सुरक्षा जैसे कार्य भी शामिल हैं।

विगत 47 सप्ताह (16 मई 2021 तक) यह अभियान बहुत लोकप्रिय रहा। बाराँ, कोटा, अलवर, झालावाड़, जयपुर, चुरू, उदयपुर, राजसमंद, चितौड़गढ़, जोधपुर, बिकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, आदि कई जिलों में वृक्षारोपण हुआ है। प्रत्येक रविवार को न्यूनतम 5 से लेकर सैकड़ों की संख्या में पौधे रोपे गए।

कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

- कोटा में लगभग 1000 पौधे लगाकर उपवन विकसित किया जा रहा है।
- बारां में लगभग 1000 पौधे लगाने के साथ डेढ़ दर्जन तालाबों को बरगद, पीपल द्वारा हराभरा किया गया।
- अलवर में मोती डूंगरी सहित सैकड़ों गांवों में लगभग 2800 पौधे लगाए गए।
- चुरू, उदयपुर में स्कूल आदि सार्वजनिक जगहों पर वृहद वृक्षारोपण हुआ।
- हज़ारों की संख्या में तुलसी की पौध वितरित की गईं।

डॉ. मुकेश मीणा के अनुसार अभी तक लगाये गए लगभग सभी पौधे जिन्दे हैं। इस अभियान का उद्देश्य सिर्फ वृक्षारोपण आन्दोलन मात्र नहीं है, बल्कि युवा ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने का प्रयास भी है।

दिया, बाराँ ने रविवासरीय पंचवटी रोपण अभियान के अन्तर्गत 23 मई को समीपवर्ती गाँव कलमंडा के दोनों तालाबों पर बरगद, पीपल आदि के पौधे लगाये। डॉ.मुकेश मीणा के अनुसार इन पौधों की सुरक्षा के लिए ट्रीगार्ड लगाये गए। पुराने पौधों के थाँवले बनाए गए, बाड़ झाड़ किया गया और वृक्षों को पानी दिया गया। इस अवसर पर राज. शिक्षक संघ युवा के जिलाध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंह मूंडली और श्री बसंत सोनी, भूपेन्द्र सांखला, पराग वारा, अजय तम्बोली, अर्जुनसिंह तंबोली, योगेश मीणा एवं शिक्षक संघ के युवाओं ने इस वृक्षारोपण अभियान में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। वृक्षारोपण का यह कार्य प्रशासन की अनुमति लेकर कोरोना गाइडलाइन का पालन करते हुए किया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस से वृक्षगंगा अभियान का शुभारम्भ हुआ

कानपुर देहात

राजनांदगाँव

सागर

'तरु' को वृक्ष का पर्यायवाची शब्द माना जाता है, किन्तु तरु का शाब्दिक अर्थ है 'तारने वाला'। वृक्ष अपने रोपण कर्त्ता को नरक से तारते हैं, रक्षा करते हैं।

भारतीय संस्कृति में कुँआ और जलाशय खुदवाने, विद्यालय, धर्मशाला, मन्दिर बनवाने, वृक्ष लगाना आदि को बहुत बड़े पुण्य का कार्य कहा गया है, क्योंकि ये सब व्यक्ति के मरने के बाद भी संसार का कल्याण करते रहते हैं।

डॉ. अनिल तिवारी,
कुलाधिपति स्वामी विवेकानन्द विवि., सागर

कानपुर देहात। उत्तर प्रदेश

विश्व पर्यावरण दिवस के दिन गायत्री परिवार कानपुर देहात द्वारा कई तहसील मुख्यालयों में वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित किए गए। अकबरपुर तहसील में 35, भोगनीपुर में 110 सिकंदरा में 10, डेरापुर में 5 और मैथा में 5; कुल 165 वृक्ष लगाए गए। जिला समन्वयक श्री बिशन सिंह ने पर्यावरण संरक्षण के लिए किए गए इस अक्षय पुण्यदायी कार्य के लिए सभी का आभार व्यक्त किया।

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्या मंदिर (हिन्दी माध्यम), केशरनगर में समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं ने नींबू की पौध लगाकर बड़े उत्साह के साथ पर्यावरण दिवस मनाया। विद्यालय प्राचार्य सुश्री सीमा श्रीवास्तव एवं अकादमी प्रभारी श्री आकाश ताम्रकार ने इस अवसर पर मानव जीवन पर वृक्षों के पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा की। कार्यक्रम में गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर सुरजन, श्रीमती सुषमा सुरजन, उपाध्यक्ष श्रीमती संध्यादेवी सिंघल, सचिव श्री हरीश गाँधी, गायत्री विद्या मंदिर (हिन्दी माध्यम)की प्राचार्य सुश्री सीमा श्रीवास्तव, श्रीमती वत्सला अय्यर आदि समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

सागर। मध्य प्रदेश

दिनांक 6 जून 2021 को वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर परिसर में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें 400 औषधीय, छायादार एवं फलदार वृक्षों के पौधे रोपे गए। कार्यक्रम का शुभारंभ विवि. के कुलाधिपति व गायत्री परिवार की आपदा प्रबंधन समिति के जिला संयोजक डॉ. अजय तिवारी जी ने सपरिवार पौधारोपण कर किया।

सभी परिजनों ने इस अवसर पर 4 वर्ष पहले लगाए गए कल्प वृक्ष के पास बैठकर गायत्री उपासना की। उन्होंने कोरोना से दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु माँ गायत्री से प्रार्थना की।

छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

16 मई छिन्दवाड़ा में चल रहे रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान का 147वाँ सप्ताह था। जिला पर्यावरण अभियान प्रभारी श्री विनोद माहोरे के अनुसार उस दिन युवा प्रकोष्ठ प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे की मुख्य उपस्थिति में गायत्री गोधाम बैतूल रोड छिंदवाड़ा में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री आर.के. सोनी, राजेश साहू, विकास धुर्वे, दिलीप धादौड़े एवं गोधाम के परिव्राजक प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

आगामी एक वर्ष में लगायेंगे लाखों वृक्षों की पौध

कोलकाता। प. बंगाल

पिछले 11 वर्षों से वृक्षारोपण अभियान को शानदार गति दे रहे गायत्री परिवार युथ ग्रुप, कोलकाता ने विश्व पर्यावरण दिवस पर लगभग 20 स्थानों पर वृक्षारोपण किया। इस अभियान से जुड़े सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने विभिन्न प्रजातियों के 501 पौधे रोपे।

गायत्री परिवार युथ ग्रुप, कोलकाता कई लोकप्रिय कार्यक्रमों को गति देने का आदर्श प्रस्तुत कर रहा है। उनके द्वारा चलाए जा रहे रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान का यह 553वाँ रविवार था। इन 553 रविवारों में 157882 पेड़ लगाए गए हैं।

'मिशन 3650' के अन्तर्गत 10 वर्षों तक हर दिन वृक्षारोपण करने का संकल्प है। इस अभियान से पूरे देश के परिजन जुड़े हैं। विगत 294 दिनों में 2383 पौधे रोपे जा चुके हैं।

संकल्प दिवस-गायत्री जयन्ती

20 जून-गायत्री जयन्ती रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान का 555वाँ रविवार होगा। इस दिन को गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता संकल्प दिवस के रूप में मना रहा है। इस समूह से जुड़े देश-विदेश के कार्यकर्त्ता उस दिन उनके द्वारा आगामी वर्ष में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के संकल्प लेंगे। अभियान संयोजक श्री रवि शर्मा के अनुसार समाचार लिखे जाने तक (10 जून) तक 1,00,000 से अधिक वृक्ष लगाने के संकल्प विविध शाखाओं की ओर से आ चुके हैं।

555 वाँ वृक्षारोपण रविवार

- अब तक लगाए 1,60,000 पेड़

मिशन 3650

- 10 वर्षों तक हर दिन वृक्षारोपण

पर्यावरण दिवस-2021

- 20 स्थानों पर रोपे 501 पौधे

विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण

स्वच्छता अभियान

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता पर्यावरण शुद्धिकरण की दृष्टि से प्रत्येक शनिवार को सफाई अभियान चलाता है। 5 जून इस क्रम का 186वाँ शनिवार था। सभी कार्यकर्त्ताओं ने पर्व के विशेष उत्साह के साथ अपने-अपने क्षेत्र की सफाई की।

त्याग और ज्ञान एक ही वस्तु है। जो ज्ञान त्याग का पर्यायवाची है, वही सत्य ज्ञान है, तुम्हारे वास्तविक स्वरूप का ज्ञान है।

कोरोना संक्रमण काल में अनवरत चल रही हैं सेवाएँ

ग़रीब किसानों को निःशुल्क बीज दिये

वलसाड़। गुजरात

कोरोना महामारी से प्रभावित ग़रीब परिवारों की मदद के लिए गायत्री परिवार द्वारा तरह-तरह के अभियान चलाए जा रहे हैं। वलसाड़ के परिजनों ने किसानों की मदद करते हुए एक नया प्रयोग किया। आगामी दिनों बुवाई के लिए आवश्यक बीज उन्हें निःशुल्क प्रदान किए गए।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत गायत्री परिवार एवं डिवाइन विंग्स वलसाड़ ने मिलकर 2 जून 2021 को 110 किट बीज वितरित किए। ये बीज उन 27 आदिवासी परिवारों को दिए गए हैं, जिनके

श्री उर्मिल देसाई किसानों को बीज देते हुए

घर में कोरोना संक्रमण के कारण घर के सदस्यों की मृत्यु हो गई है और उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है।

वृक्षारोपण की प्रेरणा भी

- गायत्री परिवार ने सभी लाभार्थी व्यक्तियों को विश्व पर्यावरण दिवस के दिन एक पौधा अवश्य लगाने की प्रेरणा प्रदान की।
- बीज वितरण का यह कार्यक्रम यू.के. निवासी श्रीमती निर्मला बेन के विशेष सहयोग से आयोजित किया गया था।

पाँच गाँव गोद लिये, वितरित किए मेडिकल किट

चूरू। राजस्थान

दिव्य भारत युवा संघ (दिया) की चूरु शाखा ने कोरोना काल में परमार्थ सेवा के उद्देश्य से तहसील के पाँच गाँव को गोद लिये हैं। ये गाँव हैं गजासर, डाबला, देपालसर, खरतवासिया एवं घटेल। दिया की टीम गाँव के जरूरतमंदों को चयनित कर उन्हें मेडिकल किट, ऑक्सीमीटर, थर्मामीटर, मास्क और सेनिटाइजर वितरित कर रही है। इसके साथ परामर्श के लिए चिकित्सकों की सूची उनके मोबाइल नम्बर सहित दी जा रही है।

सुश्री वंदना आर्या ने दिया कार्यकर्त्ताओं को सामग्री प्रदान करते हुए कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है। दिया जैसे संगठनों से जुड़कर युवाओं में संस्कार उत्पन्न हो रहे हैं जो समाज के लिए शुभ संदेश है। गायत्री परिवार के पृथ्वीराज सैनी और नीरज जांगिड़ ने कार्यकर्त्ताओं को अपनी कार्ययोजना समझाई।

जीतेगा भारत, हारेगा कोरोना

दिया, जोधपुर ने गाँव-गाँव जाकर कर असंख्य पीड़ितों की सहायता की

जोधपुर। राजस्थान

कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के भीषण दौर में दिया, जोधपुर ने गाँव-गाँव पहुँचकर ज़रूरतमंदों की सेवा-सहायता का अभियान चलाया। दिया, राजस्थान के प्रान्तीय प्रभारी प्रो. विवेक विजय ने बताया कि दिया, जोधपुर से जुड़े कार्यकर्त्ता लगभग 30 से 40 गाँवों में सक्रिय हैं। प्रत्येक गाँव में 4 से 5 कार्यकर्त्ता बड़ी तन्मयता के साथ ग्रामीणों की सेवा-सहायता कर रहे हैं। ज़रूरतमंदों को पल्स ऑक्सीमीटर, दवाइयाँ, भोजन, राशन हर प्रकार की सेवाएँ देते हैं। इसके साथ ही वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से डॉक्टर्स से भी बात करा देते हैं, ताकि समय पर सही उपचार मिल सके। डॉक्टर्स की टीम में श्री अरविंद माथुर, भूतपूर्व प्राचार्य मेडिकल कॉलेज जोधपुर के निर्देशन में कई उच्च शिक्षण संस्थानों के कई वरिष्ठ चिकित्सक एवं स्वास्थ्य कर्मी जुटे हैं।

एक माह से अधिक चली भोजन सेवा

प्रतिदिन 100 से अधिक लोगों तक भोजन पहुँचाया

अलवर। राजस्थान

गायत्री परिवार अलवर ने कोरोना महामारी के इस संकट काल में प्रतिदिन 100 से अधिक लोगों तक शुध्द, सात्विक एवं ताजा भोजन बनाकर कोरोना से पीड़ित परिजनों तक पहुँचाने का कार्यक्रम चला रखा है। श्री सतीश सारस्वत के अनुसार यह कार्यक्रम बुद्ध पूर्णिमा से आरंभ कर जेष्ठ पूर्णिमा तक पूरे एक माह चलाने का निर्णय लिया गया।

यह सेवायज्ञ आयुक्त, नगर परिषद अलवर के सहयोग से संचालित हो रहा है। गायत्री शक्तिपीठ करोली कुण्ड, अलवर पर प्रतिदिन भोजन तैयार किया जाता है, जिसे नगर परिषद को सौंप दिया जाता है। नगर परिषद के कर्मचारी उसे ज़रूरतमंदों तक पहुँचाते हैं। 100 पैकेट से अतिरिक्त भोजन शक्तिपीठ पर ही आने वाले ज़रूरतमंदों में बाँट दिया जाता है। इस सेवायज्ञ में मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री राजेन्द्र प्रसाद सेठी के अलावा श्री विजय कुमार गुप्ता, श्री नवल किशोर सिंह चौहान, श्री दिनेश गुप्ता, श्रीमती ज्योति गुप्ता, श्रीमती मंजू चौहान, श्रीमती ज्ञान देवी शर्मा, परिव्राजक दम्पति श्री व श्रीमती दौलतराम शर्मा की प्रमुख भागीदारी है।

रंग लाया गायत्री परिवार का जागरूकता अभियान

शत प्रतिशत वैक्सीनेशन वाला मध्य प्रदेश का पहला गाँव बना आदर्श ग्राम भुलाँय

भुलाँय, गुना। मध्य प्रदेश

इन दिनों समाज में कोरोना वैक्सीन को लेकर अनेक भ्रम-भ्रान्तियाँ फैली हैं। ऐसे में गुना जिले के आदर्श ग्राम भुलाँय और आसपास के क्षेत्र में गायत्री परिवार द्वारा चलाया गया वैक्सीनेशन जनजागरूकता अभियान बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुआ। प्राप्त समाचारों के अनुसार गाँव को पहली खेप में मात्र 100 डोज़ मिले थे, लेकिन गायत्री परिवार के प्रचार अभियान से लोगों में इतना उत्साह था कि पहली बार लाए गए 60 डोज मात्र 3 घण्टे में ही समाप्त हो गए। इसके बाद बचे हुए डोज़ भी मँगाए गए।

स्थानीय गायत्री परिवार ने पूर्व दो दिनों से गाँव के सामाजिक कार्यकर्ता, ग्राम पंचायत समिति एवं जन अभियान परिषद के साथ मिलकर जनजागरण अभियान चलाया। परिजनों से प्राप्त समाचार के अनुसार युवा युग निर्माणियों के संकल्प और परिश्रम के परिणाम स्वरूप आदर्श ग्राम भुलाँय मध्य प्रदेश का पहला ऐसा गाँव बना, जिसमें 100% टीकाकरण हुआ। इससे आसपास के ग्राम धरनावदा, खिरिया, विजयपुर, उदयपुरी, सनोतिया आदि में बहुत जागरूकता आई है।

कोरोना योद्धाओं का उत्साहवर्धन

वडोदरा। गुजरात

गायत्री परिवार वरेण्यमं ग्रुप वडोदरा ने 26 मई के दिन गृहे-गृहे यज्ञ के राष्ट्रीय अभियान में भाग लेते हुए एक ओर कोरोना महामारी के संक्रमण से बचाव के लिए विशेष प्रयास किए, वहीं यज्ञ का यह सामूहिक कार्यक्रम कोरोना योद्धाओं के उत्साहवर्धन के लिए भी समर्पित रहा। शाखा समन्वयक श्री अनिल रावल के अनुसार उस दिन 573 घरों में यज्ञ हुआ, जिनमें से नए 177 लोगों ने शान्तिकुञ्ज से सीधे जुड़कर ऑनलाइन यज्ञ कर्मकाण्ड प्रसारण के साथ यज्ञ किया।

गृहे-गृहे यज्ञ का राष्ट्रीय अभियान

शत-प्रेरक यज्ञवीरों का सम्मान

11000 घरों में वर्षभर होंगे यज्ञ

उज्जैन। मध्य प्रदेश

बुद्ध पूर्णिमा 26 मई 2021 को गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना के राष्ट्रीय अभियान के अन्तर्गत 40 हज़ार घरों में यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिला संगठन ने यज्ञोपरांत एक समीक्षा बैठक (वेबिनार) आयोजित की, जिसमें इस महान सफलता में सहयोगी रहे कार्यकर्त्ताओं के प्रति आभार ज्ञापित किया। इस समारोह में ऐसे 50 कार्यकर्त्ताओं को 'शत प्रेरक सम्मान' से सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में सौ से अधिक परिवारों को यज्ञ के लिए सहमत किया था।

उपजोन समन्वयक श्री राजेश पटेल ने बताया कि प्रत्येक शत प्रेरक यज्ञवीर को एक सम्मान पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर उज्जैन नगर में अगले वर्ष तक 11000 घरों को प्रतिदिन या साप्ताहिक यज्ञ कराने के लिए प्रेरित व संकल्पित कराने का भी लक्ष्य रखा गया।

चलित यज्ञ से ग्राम सेनिटाइज़ेशन

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

प्रज्ञा मंडल सेक्टर-6 में कोरोना महामारी के शमन की प्रार्थना के साथ चल यज्ञ की व्यवस्था गायत्री परिवार द्वारा की गई। प्रज्ञा रथ में हवन कुण्ड रखकर हवन किया गया, जो गली-मोहल्लों में घूमा। नगरवासियों ने इस कार्यक्रम को बहुत सराहा और बिना किसी जाति-धर्म के भेदभाव के महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ प्रदान कीं।

यज्ञ अभियान प्रशासनिक निर्देशों का पूरी तरह पालन करते हुए आयोजित किया गया था। राजेंद्र तिवारी, आनंद सिन्हा, देवघर पैकरा, जगन्नाथ शोरी, श्री राजेंद्र तिवारी ने फेरी का नेतृत्व किया।

21 हज़ार भोजन पैकेट बाँटे

झालावाड़। राजस्थान

दिया, राजस्थान की झालावाड़ शाखा विगत एक वर्ष से कोरोना महामारी से प्रभावित ज़रूरतमंदों की सेवा-सहायता कर रही है। 10 जून को शाखा द्वारा चलाई जा रही माँ भगवती भोजनशाला का एक वर्ष पूरा हुआ। इस एक वर्ष में प्रतिदिन बस स्टैण्ड, अस्पताल, प्रमुख चौराहे, गरीब बस्तियों में पहुँचकर दिया से जुड़े युवाओं ने भोजन पैकेट्स बाँटे। एक वर्ष में 21 हजार से अधिक लोगों को भोजन पैकेट दिए गए। शाखा परिजनों ने एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में 10 जून को मुंडेरी, धनवाड़ा, गोपालपुरा स्थित झुग्गी बस्तियों में 350 लोगों को भोजन दिया।

बेसहारा माँ की सहायता के लिए पहुँचा गायत्री परिवार

ग़रीब दिव्यांग परिवार को राशन देते गायत्री परिवार के युवा

झालारापाटन, झालावाड़। राजस्थान

तहसील झालारापाटन के लुहरिया देह के समीप के टापरी गाँव में एक ग़रीब माँ ऐसी है जो बकरियाँ चराकर अपने नेत्रहीन पति, नेत्रहीन पुत्र और उसके दो बच्चों को पाल रही हैं। पुत्र थोड़ा-बहुत सहारा देता था, लेकिन रोड़ एक्सीडेण्ट में उसके भी दोनों हाथ टूट गए। ऐसे में इस बेसहारा परिवार को सहारा देने गायत्री परिवार पहुँचा। उसे एक माह तक के लिए आवश्यक राशन प्रदान किया। जरूरत पड़ने पर आगे भी सहायता का आश्वासन दिया।

200 परिवारों को राशन दिया

चंदौली। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार चंदौली के समर्पित कार्यकर्त्ता डॉ. भगवान दास जी ने कोरोना पीड़ित ज़रूरतमंदों की सहायता करते हुए अपनी सहृदयता का शानदार परिचय दिया। उनके विशेष सहयोग से स्थानीय युवाओं ने 75 ज़रूरतमंद परिवारों को पाँच दिन के लिए निःशुल्क राशन प्रदान किया। सेवा-संवेदना का यह अभियान क्रमशः आगे भी चलता रहा। समाचार प्राप्त होने तक शाखा द्वारा लगभग 200 परिवारों की सहायता की जा चुकी थी।

17000 लोग लाभान्वित हुए

नरोडा, अहमदाबाद। गुजरात

कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के समय नरोडा शाखा ने संपर्क रोधी (क्वारंटाइन) रहे मरीज़ एवं उनके परिवारों के लिए निःशुल्क माँ भगवती टिफिन सेवा आरम्भ की थी। इन सेवाओं का 1700 से अधिक लोगों ने लाभ लिया।

नरोडा : प्रतिदिन तैयार होते हैं सैकड़ों शुद्ध, सात्विक भोजन पैकेट

चित्त की शुद्धि न होने तक भगवान की उपलब्धि नहीं हो सकती।

पीड़ित मानवता के हितार्थ सहज प्रवाहित हुई संवेदना

'यास' तूफान प्रभावित 11 गाँवों में सेवा-सहायता

प्रान्तीय आपदा प्रबन्धन समिति, ओडिशा

फोनी और अम्फान तूफान के समय भी की थी हज़ारों परिवारों की सहायता

भद्रक। ओडिशा

चक्रवाती तूफान 'यास' से पीड़ित जिले भद्रक के बासुदेवपुर एवं तिहिदी ब्लॉक के 11 गाँवों में गायत्री परिवार की राज्य आपदा प्रबंधन समिति ने सैकड़ों पीड़ित परिवारों की सहायता की। उन्होंने तूफान प्रभावित ज़रूरतमंदों में राशन सामग्री, बिस्किट्स, तारपोलिन, सोलर लाइट, मास्क, साबुन आदि वितरित किए। इस कार्य में भुबनेश्वर एवं कटक गायत्री परिवार के परिजनों का विशेष सहयोग रहा।

आपदा प्रबन्धन समिति के समन्वयक श्री प्रकाश बारिक ने बताया कि ओडिशा में गायत्री परिवार की राज्य स्तरीय आपदा प्रबन्धन समिति का गठन 'फोनी' तूफान के समय शान्तिकुञ्ज की आपदा प्रबन्धन समिति के दिशा-निर्देश एवं प्रशिक्षण के अनुरूप किया गया था। उसके बाद 'अम्फान' तूफान से प्रभावित जिलों में भी इस समिति ने भरपूर कार्य किया। यह समिति अपने मिशन के लक्ष्य-पीड़ा और पतन निवारण को ध्यान में रखते हुए जब भी आवश्यकता होगी, जनसेवा में पीछे नहीं रहेगी।

यास तूफान के समय की गई सेवा-सहायता कोविड-19 की गाइड लाइन के अनुरूप ही की गई। इस कार्य में समिति के डॉ. विश्वरथ जी, श्री आदित्य भाई, श्री मधुसूदन जी तथा भद्रक जिले के स्थानीय परिजनों का सहयोग प्रमुख था।

बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए आरम्भ हुई ऑनलाइन सेवाएँ

चरित्र निर्माण, स्वावलम्बन एवं संस्कार संवर्धन

रायपुर। छत्तीसगढ़

बच्चों का व्यक्तित्व विकास अपने मिशन का एक बड़ा कार्यक्रम है। बाल संस्कार शालाओं का इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। रायपुर शाखा ने कोरोना संक्रमण की प्रतिकूल परिस्थितियों में अब इस दिशा में ऑनलाइन कार्यक्रम आरम्भ कर दिए गए हैं। दो वर्गों में बाल संस्कार शालाएँ आरम्भ हुई हैं। इनमें समय की प्रतिकूलताओं के बीच बच्चों और युवाओं का मनोबल व उत्साह बढ़ाने, उन्हें स्वावलम्बी और संस्कारवान बनाने के साथ उनके चरित्र निर्माण सम्बन्धी कक्षाएँ होती हैं।

बाल संस्कार शालाएँ :

प्रत्येक रविवार और गुरुवार को

5 वर्ष से 16 वर्ष तक के बच्चों के लिए **दोपहर 11 से 12.30 बजे**

16 वर्ष से 22 वर्ष के किशोर-युवाओं के लिए **सायं 3.30 बजे से 5 बजे**

प्रशिक्षक : डॉ. कुंती साहू, श्रीमती अनोखी निषाद, आनंद श्रीवास्तव, प्रेमलता चंद्राकर, दुर्वासा, मानसी सिंह एवं सविता पटेल आदि

भागीदारी के लिए संपर्क कीजिए : लच्छुराम निषाद 7974136180, अनोखी निषाद 6264409841

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों की ऑनलाइन मोटिवेशनल कक्षाएँ

हजारीबाग। झारखण्ड

छोटानागपुर प्रमण्डल में हजारीबाग एजुकेशनल हब के रूप में जाना जाता है। वहाँ हजारीबाग के अलावा चतरा, कोडरमा, गिरिडीह सहित कई जिलों के लगभग एक लाख युवा विविध प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ ने इस उदीयमान पीढ़ी को व्यसन से बचाने एवं उन्हें आध्यात्मिकता की ओर ले जाते हुए उनकी ऊर्जा को सृजन में लगाने के लिए प्रत्येक रविवार को ऑनलाइन मोटिवेशनल कक्षाओं की व्यवस्था कर रखी है। अतंर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस-31 मई के लिए जूम एप के माध्यम से 15वीं मीटिंग आयोजित की गई।

इन ऑनलाइन कक्षाओं में युवाओं की बहुत रुचि है। उन्हें जीवन की गरिमा, गायत्री उपासना से बेहतर सफलता, संयमित-संतुलित जीवन, योग, आयुर्वेद आदि की शिक्षाएँ दी जाती हैं।

भोपाल शाखा ने मनाया व्यसनमुक्ति पखवाड़ा

प्रेरक युग साहित्य और नशामुक्ति सम्बन्धी दवाइयाँ वितरित कीं

भोपाल। मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ पिछले कई वर्षों से 'नशामुक्त स्वर्णिम मध्य प्रदेश' के संकल्प के साथ पूरे प्रदेश में नशामुक्ति अभियान चला रहा है। उनके द्वारा पूरे प्रदेश में जनजागरण यात्रा और सभाएँ तथा जनसंपर्क जैसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। 31 मई-व्यसनमुक्ति दिवस पर भी व्यसनमुक्ति जागरूकता वेबिनारों का आयोजन किया गया। लोगों से नशा छोड़ने के लिए संकल्प पत्र भी भरवाए गए।

भोपाल शाखा ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस से एक सप्ताह तक व्यसनमुक्ति पखवाड़ा मनाने की घोषणा की। व्यसनमुक्ति साहित्य और व्यसन छोड़ने में सहायक दवाइयाँ वितरित की। युवा प्रकोष्ठ महिला मण्डल ने जरूरतमंद महिलाओं को सेनेटरी पैड भी दिए।

रक्तदान शिविर

कसरावद में 86 और मण्डला में 22 यूनिट रक्तदान हुआ

गायत्री शक्तिपीठ कसरावद में शिविर के सहयोगियों का सम्मान

कसरावद, खरगोन। म.प्रदेश

गायत्री परिवार तहसील संगठन कसरावद ने श्रीनगर स्थित गायत्री मन्दिर कसरावद में 19 मई को जिला ब्लड बैंक खरगोन के सहयोग से रक्तदान शिविर आयोजित किया। कोरोना महामारी के कारण अस्पतालों में रक्त की बढ़ती माँग को देखते हुए यह शिविर आयोजित किया गया था। इसमें कसरावद और आसपास के गाँवों से आए 86 लोगों ने रक्तदान कर सेवाधर्म निभाया।

इस शिविर में 20 से अधिक महिलाओं और नवयुवतियों ने रक्तदान कर अपनी भाव संवेदनाओं का परिचय दिया। सभी रक्तदाताओं को गायत्री परिवार की ओर से प्रशस्ति पत्र एवं युगसाहित्य भेंटकर सम्मानित किया गया। माननीय एसडीएम महोदय संघ प्रिय जी ने इस गायत्री परिवार के सेवाओं का साधुवाद किया। रक्तदान शिविर का खर्च वृत्तिका सुपुत्री प्रज्ञा भूपेंद्र पाराशर, बैंगलोर द्वारा वहन किया गया।

मण्डला। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार मण्डला के युवा प्रकोष्ठ के द्वारा 27 मई को स्थानीय गायत्री मंदिर परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस का शुभारम्भ आइएफ एस एनएस यादव कान्हा प्रोजेक्ट के द्वारा किया गया। शिविर प्रभारी श्री अशोक कुकरेजा ने इस अवसर पर रक्तदान से सम्बन्धित जानकारियाँ प्रदान करते हुए सभी रक्तदाताओं से अन्य लोगों को भी रक्तदान के लिए प्ररित करने का आह्वान किया।

इस शिविर में कुल 22 यूनिट रक्तदान हुआ। श्री गिरीश चंदानी नगरपालिका उपाध्यक्ष व गायत्री परिवार के प्रमुख कार्यकर्त्ता रामाश्रय चंद्रोल, रामनाथ पटेल आदि भी उपस्थित रहे। समस्त रक्तदाताओं को फल, बिस्किट, जूस के साथ रक्तदान प्रमाण पत्र भी वितरित किया गया।

ऑनलाइन गर्भ संस्कार महोत्सव

70 बहिनों ने अलग-अलग समूहों में पुंसवन संस्कार कराया

प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ द्वारा 30 मई को ऑनलाइन गर्भ संस्कार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें रायपुर, बलौदाबाजार, सरगुजा, बलरामपुर में बहिनों के अलग-अलग समूह इस कार्यक्रम से जुड़े। कार्यक्रम संचालिका श्रीमती अमृता जायसवाल के अनुसार इस कार्यक्रम के साथ 70 गर्भवती बहिनें और उनके परिवारी जन जुड़े। सभी गर्भवती बहिनों का संक्षिप्त यज्ञ के साथ पूरे विधि-विधान से पुंसवन संस्कार कराया गया।

डॉ. कुन्ती साहू, सुश्री रोमा साहू आदि ने पुंसवन संस्कार के प्रभाव की वैज्ञानिक तथ्यों के साथ जानकारी दी। स्वास्थ्य विभाग से जुड़ी मितानिन-आशा बहिनें, गायत्री परिवार की कार्यकर्त्ता बहिनें भी इस कार्यक्रम से जुड़ी थीं।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री रामगोपाल अग्रवाल, बलौदा बाजार, जाँजगीर-चाँपा। छत्तीसगढ़

शान्तिकुञ्ज के विस्तार ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार में अत्यंत समर्पित भाव से 16 वर्षों तक सेवाएँ प्रदान करने वाले कार्यकर्त्ता श्री रामगोपाल अग्रवाल 1 मई 2021 को गुरुसत्ता की सूक्ष्मचेतना के साथ एकाकार हो गए। उनका समर्पण इतना गहरा था कि सन् 1974 में परम पूज्य गुरुदेव को 60,000 रुपये की धनराशि एकमुश्त में ही अर्पित कर दी। उसके बाद हर वर्ष ब्याज की राशि मिशन को दान करते रहे।

प्रारंभिक दिनों में परम पूज्य गुरुदेव के साथ लेखन कार्य किया, फिर ब्रह्मवर्चस के साहित्य विक्रय केन्द्र पर सेवाएँ दीं। जीवन के अन्तिम दिनों में उनका पाँच लाख रुपये का अनुदान शान्तिकुञ्ज को देने का मन था। उनके इस संकल्प को उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोजिनी अग्रवाल ने पूरा किया है।

श्रीमती मंजुलाबेन पण्ड्या, महेसाणा। गुजरात

शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री विष्णुभाई पण्ड्या की धर्मपत्नी तथा सन् 1975 में अपने गृहनगर महेसाणा में गायत्री परिवार की शाखा का शुभारम्भ करने वाली श्रीमती मंजुलाबेन पण्ड्या 30 मई 2021 को गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गईं। वे इन दिनों नगर के प्रज्ञापीठ और शक्तिपीठ की बहिनों के साथ मिलकर 6000 ज्ञानघट और युग साहित्य विस्तार का कार्यभार सँभाल रही थीं। यह उनका मिशन के प्रति समर्पण भाव ही था कि स्वयं घर रहकर शतायु माता की सेवा करती रहीं और अपने पति श्री विष्णुभाई पण्ड्या को मिशन की बड़ी जिम्मेदारियाँ सँभालने के लिए शान्तिकुञ्ज भेज दिया।

श्री राम सहाय मुकाती, कालापीपल, शाजापुर। म.प्र.

अत्यंत ऊर्जावान और प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी ग्राम आगखेड़ी के निवासी कार्यकर्ता श्री राम सहाय मुकाती का 64 वर्ष की आयु में दिनांक 25 मई 2021 को देहावसान हो गया। गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान के अंतर्गत वे पूरे क्षेत्र में बड़े उत्साह के साथ सक्रिय रहे।

श्री मंगल प्रसाद लोहिया, बलरामपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बलरामपुर के संस्थापकों में से एक श्री मंगल प्रसाद लोहिया जी का दिनांक 30 मई को 96 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने आसपास के कई जिलों में मिशन का प्रचार विस्तार किया। इस उम्र में भी वे शक्तिपीठ पर आकर कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन-उत्साहवर्धन करते रहे।

श्री शिवप्रसाद अरोड़ा एवं श्री बृजलाल शर्मा, बिलासपुर। हि.प्र.

छः दशक से भी अधिक समय तक मिशन की लम्बी सेवा करने के पश्चात् गायत्री शक्तिपीठ बिलासपुर से जुड़े अत्यंत प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री शिव प्रसाद अरोड़ा 10 मई 2021 को गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना के साथ एकाकार हो गए। वे शक्तिपीठ के ट्रस्टी भी थे।

श्री बृजलाल शर्मा जी शान्तिकुञ्ज में प्राण प्रत्यावर्तन शिविरों के समय परम पूज्य गुरुदेव से जुड़े। वे साहित्य प्रचार और व्यसनमुक्ति आन्दोलन में विशेष रुचि रखते थे। उनका 21 मई 2021 को देहावसान हो गया।

शान्तिकुञ्ज एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार की परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी से प्रार्थना है कि उपरोक्त दिवंगत देवात्माओं के साथ विगत दिनों दिवंगत समस्त देवात्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान दें, उनके परिवारी जनों को इस वियोग को सहने की शक्ति प्रदान करें।

झुग्गीवासियों के लाभार्थ चिकित्सा शिविर

बीकानेर। राजस्थान

दिया, बीकानेर शाखा कोविड संक्रमण काल में जरूरतमंदों की हर प्रकार से मदद कर रहे हैं। वे झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को निःशुल्क चिकित्सा सेवा व भोजन उपलब्ध करा रहे हैं।

दिया समन्वयक श्री धनंजय सारस्वत ने बताया कि सरदार मेडिकल कॉलेज एवं पी.बी.एम. हॉस्पिटल के रेसीडेंट डॉक्टर्स के मार्गदर्शन में मुरलीधर व्यास नगर स्थित झुग्गी बस्ती में 3 जून को चिकित्सा शिविर लगाया गया। इसमें 97 लोगों का स्वास्थ्य परिक्षण किया गया, उन्हें आवश्यक परमर्श एवं दवाइयाँ प्रदान की गईं।

दूसरों की निन्दा करने में खरच किया जाने वाला समय अपने दोष ढूँढ़ने में लगाओ। दूसरों को सुधारने से पहले स्वयं को सुधारो।

मानवीय जीवन की यात्रा का तत्त्वदर्शन है श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

रथयात्रा एक प्रतीक है

ओडिशा के विश्व प्रसिद्ध तीर्थ जगन्नाथ पुरी में हर वर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया से आरम्भ होने वाली भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा भारत ही नहीं, सारे विश्व के करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का अद्भुत आकर्षण है। लाखों लोगों की जनमेदिन वहाँ पहुँचकर इस दिव्य यात्रा का दर्शन करती है। वस्तुतः यह यात्रा मानवीय जीवन की यात्रा का दर्शन भी है। लौकिक दृष्टि से यह लकड़ियों से बने और घोड़े जोते मन्दिराकृति के रथों में विद्यामान भगवान जगन्नाथ जी, बलभद्र जी और सुभद्रा जी की यात्रा का समारोह दिखाई देता है। इन रथों को लाखों श्रद्धालु खींचते हुए अपने सौभाग्य का अनुभव करते हैं। लेकिन वास्तविक पुण्य लाभ तो इस यात्रा के दर्शन को समझने और अपनी जीवन यात्रा को भगवद्आकांक्षाओं के अनुरूप ढालने में है।

भगवान जगन्नाथ जी की यह रथयात्रा भारतीय जनमानास में प्रतिष्ठित-प्रवाहित सांस्कृतिक चेतना का प्रतिबिम्ब है। इसके साथ ही इसमें समाज को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने और जीवन को नीति-मर्यादाओं में, अनुशासन में रखकर उत्साहपूर्वक जीने की प्रेरणा भी विद्यमान है। यह नन्दीघोष है अपनी सनातन आस्थाओं पर गहन श्रद्धा रखते हुए आत्मिक उत्थान की ओर बढ़ते चलने के संकल्प का।

पुरी की रथयात्रा में साधारणतः सुन्दर सुसज्जित रथों में जगत्पते श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा जी को बिठाकर मन्दिर के सामने से होकर शहर के विशाल राजपथ पर भ्रमण कराया जाता है। इस यात्रा में असंख्य भक्त और श्रद्धालुजन उनका दर्शन कर जीवन को धन्य बनाते हैं। लोग श्रद्धा के साथ प्रसाद चढ़ाते और मनोकामना पूरी होने की प्रार्थना कर खुशी से घर लौटते हैं। इस अवसर पर तरह-तरह के सांस्कृतिक आयोजन भी होते हैं, जिनमें तरह-तरह के कला प्रदर्शन होते, जिसे देखकर दर्शक हर्ष अनुभव करते हैं। कुल मिलाकर इस समय एक दिव्य आनन्द-उल्लास का ऐसा वातावरण बनता है, जिसमें श्रद्धालु-दर्शकों को भक्ति भावनाओं के सागर में डुबकी लगाने का अनुपम सुअवसर प्रदान करता है।

संघशक्ति से समाजोत्थान

भगवान जगन्नाथ जी की इस रथयात्रा में सामाजिक सुख-शान्ति, प्रगति का संदेश भी निहित है। इस दिव्य अवसर पर समाज का हर वर्ग एक जैसी भावनाएँ, एक जैसे मन और विचारों के साथ आगे बढ़ता दिखाई देता है। भगवान के रथ को समाजसेवी, आध्यात्मिक पुरोधा, राजनेता, उद्योगपति, व्यवसायी, कलाकार, धनी, निर्धन सभी मिलकर अपने श्रम और मनोयोग के साथ आगे बढ़ाते दिखाई देते हैं। पुरी की रथयात्रा बताती है कि सामाजिक सुख-शान्ति और प्रगति के लिए सबके सहकार की आवश्यकता है। अपने श्रम, पुरुषार्थ, प्रभाव एवं साधनों को भगवद्अर्पण कर सबके उत्थान की कामना के साथ नियोजित करना सच्ची ईश्वरभक्ति है। समाज का उत्कर्ष व्यक्ति नहीं, सबकी सामूहिक शक्ति से ही संभव है। इस युग में गायत्री के सिद्ध साधक युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल के माध्यम से समाज को यही संदेश देते हैं।

समाज रूपी भगवान का रथ किसी अकेले के हाथों से नहीं चलता और न ही चल सकता है। इसके लिए सहस्त्रों हाथ चाहिए। सब लोग मिलकर रथ को खींचते हुए गन्तव्य स्थल की ओर ले जाते हैं। इन सहस्त्र हाथों को श्री जगन्नाथ जी के सहस्त्र बाहु या सुभद्रा रूपी दुर्गामाता की सहस्त्र भुजाएँ समझना चाहिए। नन्दीघोष, तालध्वज और देवदलन तीनों रथों को सहस्त्र-सहस्त्र भुजाएँ मिलकर खींचती हैं। ये सभी भुजाएँ एकजुट होकर ताकत लगाती हैं, तभी यह रथ अपने पर आरूढ़ रथाधिपति को गन्तव्य स्थल तक सुगमता से पहुँचा पाता है। जब शक्ति-सहकार के साथ श्रद्धा एवं उत्साह का भी समावेश हो जाता है तो फिर बड़े से बड़े काम में भी किसी तरह की थकान महसूस नहीं होती, सदैव आनन्द का अनुभव ही होता रहता है।

यह रथयात्रा वास्तव में एकता की यात्रा है, सामूहिकता की यात्रा है, भेद-भावरहित सम्मिलित शौर्य, पुरुषार्थ की यात्रा है, सामूहिकता के भाव से और समूहरूप से किये जाने वाली सफलता प्राप्ति की यात्रा है, पारस्परिक भाव, प्रेम, विनिमयात्मक संस्कृति की यात्रा है, सबके लिए सबके द्वारा सामूहिक पुरुषार्थ से की जाने वाली एक विजय यात्रा है। यह यात्रा प्रेरणा देती है कि मनुष्य समाज को भी मिल-जुलकर समाजरूपी रथ को खींचना चाहिए। यदि यह दर्शन हमारे जीवन में उतर जाये तो वर्तमान में सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर हो रहे विघटन, वैमनस्य, वैपरीत्य, संकीर्णता और संघर्ष का सहज समाधान ही मिल जाय।

अंतर्जगत की यात्रा

रथयात्रा का एक दूसरा अन्तर्निहित दर्शन है- 'जीवन यात्रा'। यह कहीं ज्यादा गहन, किन्तु उच्च और अत्यावश्यक भी है। सामान्यतः रथयात्रा भक्तगणों के पारस्परिक सौहार्द्रपूर्ण सम्मिलित प्रयास से उत्सव एवं आनन्द के साथ सम्पन्न होती है। जाति, धर्म, वर्ग, भाषा, प्रान्त, नर, नारी जैसे भेदभावों को त्यागकर एकमत, एकजुट होकर इसे सम्पन्न करते हैं। सामाजिक जीवन भी इसी प्रकार पूर्ण और सफल होता है। परन्तु जीवन रूपी रथयात्रा बिलकुल वैयक्तिक होती है। इसमें व्यक्तिगत प्रयास-पुरुषार्थ से ही प्रगति और उन्नति की ओर बढ़ा जा सकता है। व्यक्तिगत चिन्तन, मनन, निदिध्यासन और संयम-नियमादि को महत्त्व देकर आगे बढ़ना होता है। अपनी बिखरी हुई प्रवृत्तियों को बाह्य विषयों से समेटकर उनको अन्तर्मुखी करना होता है। बाह्य रथयात्रा के अपरिमित जनसमूह की तरह इस यात्रा में भी शक्तियों की बहुतायत है, पर उन सबको स्वयं को ही नियन्त्रित, नियोजित करना होता है। पंच महाभूतों के संयोग से निर्मित शरीर रूपी रथ में इन्द्रिय-रूपी घोड़े, बुद्धिरूपी लगाम, विवेकरूपी सारथी, शम, दम, तितिक्षा आदि अनेक सहायक संसाधन हैं। इन सभी की सहायता से रथी आत्मा अपने गन्तव्य की ओर बढ़ती है। आध्यात्मिक पुरुषार्थ भी सहज नहीं होता। वहाँ भी कम बाधा-विघ्न नहीं हैं। पग-पग पर काँटे, जर्रे-जर्रे में व्याघात हैं। यह यात्रा दृश्य जगत से अनेक गुना दुर्गम, दुस्साध्य है। सोचने वाली बात यह है कि इस मार्ग में ऐसी परिस्थिति प्रायः-प्रायः रहती है। बाह्य रथ को खींचने के लिए तो साथी-सहचर भी मिल जाते हैं, लेकिन अन्तर्जगत की यात्रा तो अपने तप, संयम एवं मनोनिग्रह के आधार पर ही पूरी की जा सकती है।

लौकिक जीवन में भक्तिभावना और अंतर्जगत में आनन्द-उल्लास का संचार करती भगवान जगन्नाथ जी की पावन रथयात्रा

भगवद्संकीर्तन और गायत्री मंत्र

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है- **गायत्री छन्दसामहम्। (10/35)** अर्थात् छंदों में गायत्री छंद हूँ। इस प्रकार गायत्री उपासना, जप, साधना भी प्रकारान्तर से भगवान जगन्नाथ जी की ही उपासना साधना है। भगवान जगन्नाथ जी के भक्त जो संकीर्तन करते हैं, वह है-

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

यह महामन्त्र है तो बत्तीसाक्षरी, किन्तु इसके दोनों चरण 24-24 वर्णविशिष्ट हैं। इसमें अक्षर गिनते हैं तो दोनों पाद के 16-16 कुल 32 अक्षर होते हैं, किन्तु मात्राएँ गिनते हैं तो संगीत-संकीर्तन के नियमानुसार दोनों ही पाद 24-24 मात्राओं के हैं। अर्थात् बत्तीस अक्षर विशिष्ट इस वैष्णव मन्त्र के दोनों ही पाद 24 अक्षर वाले गायत्री महामन्त्र के साथ पूर्ण सामंजस्य रखते हैं। इस वैष्णव मंत्र के जप से प्रकारान्तर से गायत्री उपासाना, साधना का प्रयोजन भी सधता है।

गायत्री महामन्त्र गूढ़ अर्थ वाला है। देश में अनेक भाषाएँ हैं, बोलियाँ हैं। संभव है हर किसी के लिए इसके भाव को समझना और धारण करना आसान नहीं रहा होगा। ऐसे में वैष्णवी मंत्र गायन, संकीर्तन और उच्चारण में सुगम हो जाता है। भक्तगण सहज ही इसका संकीर्तन करते हुए भगवद्भक्ति के भाव में डूब जाते हैं। वैष्णवी मंत्र के गायन से भी चित्त की शुद्धि, आत्मा की पवित्रता, बुद्धि की प्रखरता, मन की एकाग्रता बढ़ती है।

गायत्री मंत्र और वैष्णवी मंत्र में समानता सिद्ध करने का भाव इतना ही है कि वर्तमान युग की विषमताओं को निरस्त करने के लिए युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा ने गायत्री को युगशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने का जो अभियान चलाया है, उस भाव से यदि भगवान जगन्नाथ जी की भक्ति की जाय तो आत्मोत्थान के साथ समाज निर्माण के विराट प्रयोजन में भागीदारी, ईश्वर के साथ साझेदारी का पुण्यलाभ भी भक्तों को प्राप्त हो सकता है।

पुरी के भगवान जगन्नाथ जी, सुभद्रा जी और बलभद्र जी की दिव्य झाँकी

साधना का सम्बल

भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा यही संकेत करती और प्रेरणा देती है कि अभ्यान्तरिक यात्रा में ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रियादि सहित सद्गुणात्मक सम्पत्ति समुच्चय को ही सहस्त्र भुजाओं की तरह मानकर इन सबका विवेकसम्मत उपयोग किया जाय। एक-एक कर बढ़ाते-सँवारते हुए सद्गुणों की सेना तैयार कर उनकी सहायता से प्रगतिपथ में आने वाले अवगुण रूपी बाधाओं को समूल उखाड़ फेंकने का निरन्तर प्रयास किया जाता रहे। सद्ज्ञान की ज्योति जलाकर अपने जीवन पथ को सदैव प्रकाशित रखते हुए उस पर निरन्तर आगे बढ़ते रहा जाय। सद्ज्ञान, सद्भाव, सत्कर्म, सद्गुण ही अंतर्जगत की यात्रा को निरंतर अग्रसित करते रह सकते हैं।

सुदृढ़ मनोबल ही इस नितान्त एकाकी जीवन यात्रा का प्रमुख सम्बल है। एकान्त के निर्जन में प्रायः उदासी छायी रहती है और ऐसी जगहों पर पथिक को असुरक्षा व असहायता का बोध होता है। बाह्य जगत की रथयात्रा जैसी भीड़-भाड़, सजावट, आनन्द, उत्सव वहाँ नहीं होते। वहाँ तो केवल प्रभु के साथ तादात्म्य के आनन्द की अनुभूति ही साधना पथ पर निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करती है। यह वह शाश्वत आनन्द है जिसे एक बार पा लेने के बाद सांसारिक आनन्द अत्यंत तुच्छ प्रतीत होते हैं।

सुनसान के सहचर

अन्तर्यात्रा में अन्तः के आनन्द का अवलम्बन होता है। इसकी क्रमशः प्रगति के साथ विकसित होने वाली दक्षता, आन्तरिक प्रतिभा, अभ्यान्तरिक शक्ति-सामर्थ्य और तरह-तरह की सिद्धियाँ और विभूतियाँ पथिक की साथी-सहचर बनती जाती हैं। उनके सान्निध्य में अपरिमित आनन्द की अनुभूति होने लगती है। इस विषय में अनुभवी साधकों का कहना है कि तब बहिर्जगत की सभी सज्जाएँ, प्रदर्शन, चमक-दमक सब फीके पड़ जाते, तुच्छ प्रतीत होते हैं। अन्तर्जगत की यात्रा के बढ़ते चरणों के साथ अथाह आनन्द की अनुभूति बढ़ती ही जाती है। ऐसा दिव्यानन्द जिसका वर्णन करने में शब्द-संभार असमर्थ हो जाते हैं।

श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा में ऐसे अनगिनत प्रेरणादायक दर्शन निहित हैं। परिवार को मिलकर चलाने, समाज के विकास-प्रकाश के लिए सब मिलकर विचार विमर्श और कार्य करने तथा जीवन रूपी रथयात्रा को सद्गुणों का सम्बल लेकर सफलता के साथ पूरी करने जैसे अनेक तथ्य इसमें निहित हैं।

आइये! भगवान जगन्नाथ जी की लौकिक रथयात्रा में भागीदारी के साथ अंतर्जगत की यात्रा की ओर भी कदम बढ़ायें और जगत्पति के सतत सान्निध्य की सतत अनुभूतियों के साथ अपना जीवन सफल बनाएँ।

जिसने अपना अविनाशी, अजन्मा-अजर-अमर स्वरूप जान लिया, वह ईश्वर से दूर नहीं रहता।

वैश्विक स्तर पर अत्यंत सफल रहा गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान

बुद्ध पूर्णिमा-26 मई 2021 के दिन 20 से अधिक देशों के कई हज़ार घरों में यज्ञ हुए

एडीलेड, ऑस्ट्रेलिया में श्री नीरव वैद्य के घर दीपयज्ञ

लॉस एंजिल्स, अमेरिका में दीपयज्ञ

गायत्री परिवार कनाडा द्वारा यज्ञ

तंजानिया के लक्ष्मीनारायण मंदिर में 5 कुण्डीय यज्ञ में भाग लेते श्रद्धालु

26 मई 2021 का अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा घोषित 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना' अभियान विदेशों में भी उतना ही लोकप्रिय रहा, जितना कि भारत वर्ष में लगभग 20 देशों के कार्यकर्त्ताओं द्वारा यज्ञ किये जाने के समाचार शान्तिकुञ्ज को प्राप्त हुए हैं।

अमेरिका स्थित पाँच गायत्री चेतना केन्द्रों से मिली सूचना के अनुसार वहाँ 800 से अधिक घरों में यज्ञ हुए। **कनाडा** से श्री राकेश शर्मा जी ने 200 घरों में यज्ञ होने की सूचना दी। **इंग्लैण्ड** के श्री मनसुख भाई ने अपने देश में 700 घरों में यज्ञ होने के समाचार भेजे हैं। **ऑस्ट्रेलिया** के श्री आनन्द जायसवाल बताते हैं कि उनके देश के कई शहरों में लगभग 108 घरों में यज्ञ हुए। न्यूज़ीलैण्ड में यज्ञीय वातावरण ने सैकड़ों लोगों को उल्लसित किया।

अमेरिका-800
कनाडा-200
इंग्लैण्ड-700
ऑस्ट्रेलिया-108

खाड़ी देशों (दुबई, मस्कत, यूएई, बहरीन, कुवैत, कतर, ओमान, सऊदी अरब आदि) में 20, स्नेहा सुथार के मार्गदर्शन में **सिंगापुर** में 15 यज्ञ हुए। कुमार संभवम के नेतृत्व में मलेशिया में, अमित प्रकाश द्वारा थाईलैण्ड में, आरती बेन के प्रयासों से दक्षिण अफ्रीका में, फीज़ी में जागृति बेन द्वारा, जयन्ती भाई और मीनाबेन द्वारा न्यूज़ीलैण्ड में कई घरों में यज्ञ कराए जाने के समाचार मिले हैं। शान्तिकुञ्ज के विदेश विभाग ने तंजानिया, केन्या, युगाण्डा, मपुतो, रशिया, जापान, मॉरिशस और कांगो में भी औसतन 5-5 घरों में यज्ञ हुए हैं।

अमेरिका में गायत्री चेतना केन्द्रों पर सामूहिक यज्ञ हुए। सैकड़ों परिवार यज्ञ अभियान में ऑनलाइन जुड़े। अकेले लॉस एञ्जिल्स में 108 परिवारों ने यज्ञ किया। सायंकालीन दीपयज्ञ में 60 परिवारों ने भाग लिया। शिकागो और ह्यूस्टन में भी कोविड-19 संक्रमण से सावधानी रखते हुए सैकड़ों परिवारों ने चेतना केन्द्र पर या अपने घरों में यज्ञ किया।

> "आदरणीय भैया (डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी) को बहुत सारा धन्यवाद कि इस निराशामय वातावरण में आपकी उपस्थिति ने और आपके संवेदनशील शब्दों ने हम सबके मनों में उमंग और उत्साह की ज्योति जलाई है।
>
> – **स्नेहा सुथार, सिंगापुर**

कनाडा में गायत्री परिवार हैमिल्टन द्वारा संचालित बाल संस्कार शाला के बच्चों द्वारा दीपयज्ञ का संचालन विशेष था। इस दीपयज्ञ में मैकमास्टर यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी शामिल हुए।

यू.के. में परिजनों की माँग पर 26 मई-बुद्ध पूर्णिमा से पूर्व 23 मई (रविवार होने के कारण) को भी सामूहिक गायत्री यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया था। लगभग 700 परिवारों में 23 मई को यज्ञ हुए। इनमें परिजनों के स्वास्थ्य लाभ, दिवंगतों की आत्मशांति तथा लोगों के जन्मदिन-विवाहदिन के उपलक्ष्य में विशेष आहुतियाँ समर्पित की गईं। यज्ञीय कार्यक्रमों के माध्यम से शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के अन्तर्गत 607 घरों में गंगाजली एवं देवस्थापना की गई।

तंजानिया में गायत्री परिवार के परिजनों ने अपने-अपने घरों में यज्ञ करने के साथ लक्ष्मीनारायण मंदिर में पाँच कुण्डीय सामूहिक यज्ञ भी किया।

दुबई

लॉस एंजिल्स

सिंगापुर

मस्कत

कांगो

अमेरिका

विश्व पर्यावरण दिवस पर शान्तिकुञ्ज की पौधशाला ने एक हजार पौधे निःशुल्क बाँटे

ऊपर श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी वृक्ष-पूजन करते हुए और नीचे आद. डॉ. चिन्मय जी, श्रीमती शेफाली पण्ड्या, श्री शिव प्रसाद मिश्रा जी आदि वृक्षारोपण करते हुए

शान्तिकुञ्ज में विश्व पर्यावरण दिवस बड़े उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रद्धेय द्वय ने हर व्यक्ति से प्रकृति और पर्यावरण के साथ हो रहे अत्याचार को रोकने और उसे फिर से स्वस्थ एवं शुद्ध करने में योगदान देने का आह्वान किया।

आरंभ में कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों ने पर्यावरण जागरूकता शोभा यात्रा निकाली। इसके समापन पर श्रद्धेया शैल जीजी ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ वृक्षों का पूजन किया। तत्पश्चात् शांतिकुंज तथा देसंविवि परिसर में वरिष्ठ कार्यकर्त्ता प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, श्रीमती शेफाली पण्ड्या, व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा, जोनल समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा, श्री शिवप्रसाद मिश्र, आदि की मुख्य उपस्थिति में वृक्षारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शांतिकुंज स्थित उद्यान विभाग ने लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें सीता अशोक, आम, पीपल, नीम सहित विभिन्न देववृक्ष एवं औषधीय महत्त्व के पौधे निःशुल्क भेंट किये। शान्तिकुञ्ज की पौधशाला से एक हजार से अधिक पौधे व्यापार संघ, ज्वालापुर एवं अन्य लोगों को भी निःशुल्क पौधे उपलब्ध कराए गये।

गायत्री जयन्ती पर्व के कुछ विशिष्ट प्रसंग

गायत्री जयन्ती के विशिष्ट अवसर पर सायंकाल शान्तिकुञ्ज में विशेष दीपयज्ञ हुआ। इसका संचालन श्री श्याम बिहारी दुबे जी की टोली ने किया। युग गायकों की ओजस्वी प्रस्तुति के साथ आयोजित यह कार्यक्रम अत्यंत मनमोहक और उत्साहवर्धक था। शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती वर्ष की योजनाएँ समझाई गईं, संकल्प उभारे गए।

दीपयज्ञ के साथ ही दीपज्योति यात्रा भी निकाली गई। श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने इसका नेतृत्व किया। अखण्ड ज्योति से प्रज्वलित दीप से सैकड़ों अन्य दीप जलाए गए, जिन्हें हाथ में लेकर पंक्तिबद्ध हो कार्यकर्त्ता बहिनें ऋषियुग्म के समाधि स्थल तक पहुँचीं। इन दीपमालाओं से गुरु-स्मारक जगमगा उठे। भव्य आरती की गई। बहिनें इन्हीं दीपों से अपने दीप प्रज्वलित कर बड़ी श्रद्धा-भक्तिभाव के साथ अपने घरों में भी ले गईं।

यू-ट्यूब से सम्बन्धित नया व्हॉट्सएप नम्बर

शान्तिकुञ्ज वीडियो से सम्बन्धित जिज्ञासा एवं समाधान हेतु नया व्हॉट्सएप नम्बर- 9258352222 एवं ईमेल आई.डी. emd@awgp.org जारी किया गया। इसके माध्यम से सदस्यगण 'युग प्रवाह वीडियो पत्रिका' प्राप्त कर सकते हैं।

मध्य प्रदेश की विशिष्ट वृक्षारोपण योजना

वृक्षगंगा अभियान के अन्तर्गत 1,34,260 वृक्ष लगाने के ऑनलाइन तत्काल संकल्प हुए। यह अभियान पूरे वर्ष चलेगा। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने उद्बोधन में मध्य प्रदेश के प्रान्तीय संगठन की विशिष्ट स्थानों के लिए उपयोगी एवं ऋषि परम्परा से सम्बन्धित इस वर्ष के विशेष वृक्षारोपण अभियान का उल्लेख प्रमुखता से किया।

श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी के नेतृत्व में नवनिर्मित शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती द्वार से गुज़रती दीप ज्योति यात्रा

दीपयज्ञ के समय दीपमालाओं से जगमाते परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी के पावन स्मारक प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा

गायत्री जयन्ती के दिन जन्मदिन, विवाहदिन आदि संस्कार कराती शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनें

भारत सरकार ने 'शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती' पर जारी किया डाक टिकट

शान्तिकुञ्ज के महान उद्देश्य और उत्कृष्ट कार्यों की प्रतिष्ठा बढ़ी। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज की स्थापना की स्वर्ण जयन्ती-गायत्री जयन्ती, 20 जून 2021 के दिन भारत सरकार द्वारा विशेष डाक टिकट जारी किया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय में कोविड-19 नियमों के अन्तर्गत आयोजित एक सादे समारोह में इस डाक टिकट का विमोचन मुख्य अतिथि माननीय श्री रविशंकर प्रसाद जी, सूचना एवं प्रसारण व कानून मंत्री भारत सरकार ने किया। वे पटना से ऑनलाइन इस कार्यक्रम से जुड़े थे। देव संस्कृति विवि. के सभागार में यह कार्यक्रम उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री माननीय श्री तीरथ सिंह रावत एवं श्रद्धेया शैल जीजी की विशिष्ट उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने की। कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री बलदाउ देवांगन, डाक विभाग के निदेशक श्री सुनील पाल, हरिद्वार के जिलाधिकारी सी रविशंकर, एसएसपी सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारी, पत्रकार उपस्थित रहे।

डाक टिकट एलबम का विमोचन

बायें पटना से ऑनलाइन जुड़े माननीय श्री रविशंकर प्रसाद जी, सूचना प्रसारण एवं कानून मंत्री, भारत सरकार तथा देसंविवि के सभागार में मंचासीन गणमान्य श्री सुनील पाल, डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी, माननीय तीरथ सिंह रावत, मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्री मदन कौशिक जी, विधायक हरिद्वार

भारत को समझना है तो गायत्री परिवार को समझने का प्रयास कीजिए

• माननीय श्री रविशंकर प्रसाद जी, मंत्री, भारत सरकार

"मैंने महान संत पूज्यनीय गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी को जानने की कोशिश की तो देखा कि भारत की नैतिक और आध्यात्मिक चेतना को जगाने में उनकी बहुत बड़ी भूमिका है। वे आज़ादी के आन्दोलन के साथ राष्ट्र की आध्यात्मिक चेतना को जगाने के प्रयास भी रहे, यह एक महान उद्देश्य है।

वे एक ऐसे महान संत थे जिन्होंने हिमालय जाकर परम सुख की प्राप्ति की और उस दिव्य ज्योति को आम लोगों तक पहुँचाने का विराट आन्दोलन चलाया। आज अखण्ड ज्योति के साथ करोड़ों लोगों के हृदय में आध्यात्मिक ज्योति जल रही है।

गायत्री परिवार एक बहुत बड़ा आन्दोलन हो गया है। मैं कहता हूँ कि भारत को समझना है तो गायत्री परिवार को समझने का प्रयास कीजिए। भारत को दुनिया की एक बड़ी ताकत बनना है-नैतिक और आध्यात्मिक ताकत। इसमें मैं गायत्री परिवार-शान्तिकुञ्ज की बहुत बड़ी भूमिका देखता हूँ।

विशिष्ट महानुभावों के भावोद्गार

सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान में गायत्री परिवार का बहुत बड़ा योगदान है

• माननीय श्री तीरथ सिंह रावत, मुख्यमंत्री

"मैंने यज्ञ-संस्कारों द्वारा देवभूमि की दिव्यता के जागरण में, आपदा के समय पीड़ित मानवता की सेवा में, आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार अभियान के माध्यम से देश 10 लाख घरों तक गंगा को पहुँचाने में, निर्मल गंगा जन अभियान के माध्यम से गंगा स्वच्छता के लिए शान्तिकुञ्ज द्वारा किए जा रहे कार्यों को देखा है। राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान में गायत्री परिवार का बहुत बड़ा योगदान है।

उद्देश्य एवं कार्यों की प्रतिष्ठा बढ़ी

• श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय

"इस डाक टिकट के विमोचन से शान्तिकुञ्ज द्वारा किए जा रहे श्रेष्ठ कार्यों को सामाजिक मान्यता मिली है। परम पूज्य गुरुदेव का सबसे बड़ा काम लोगों के विचारों में उत्कृष्टता का समावेश। इस दिशा में शान्तिकुञ्ज ने अद्वितीय कार्य किया है और उसे समाज का भरपूर सहयोग मिला है।

व्यक्तित्व गढ़ने वाला गर्भगृह है शान्तिकुञ्ज

• आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय

"सामान्य दृष्टि से देखें तो शान्तिकुञ्ज का आकार साधारण-सा है। अनेकों ऐसे संस्थान होंगे जिनका स्वरूप व आकार हम लोगों की तुलना में ज्यादा विशाल है। परन्तु उस उद्देश्य की दृष्टि से देखें जिसमें मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण की अवधारणा है, जहाँ से वयं राष्ट्रे जागृयाम का उद्घोष होता है तो महसूस करेंगे कि यह एक ऐसा गर्भगृह है जहाँ मनुष्य के आध्यात्मिक कायाकल्प के तत्त्व विद्यमान हैं। व्यक्तित्व को बनाने के लिए जिस आन्तरिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, उसको पैदा करने का कारखाना है शान्तिकुञ्ज, जिसकी आज हम स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं।

गायत्री जयन्ती पर्व पर श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब का संदेश

संसार को नए सिरे से बनाना हो तो गायत्री से बढ़कर कुछ नहीं

ऑनलाइन जुड़े लाखों लोग

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में आया गायत्री जयन्ती पर्व शान्तिकुञ्ज के साथ-साथ पूरे विश्व में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 24 घण्टे का अखण्ड जप, यज्ञ आदि कार्यक्रमों में अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। कुछ संस्कार भी हुए।

कोरोना सम्बन्धी दिशा-निर्देशों और सावधानियों को देखते हुए सभी कार्यक्रमों का ऑनलाइन प्रसारण हुआ। श्रद्धेया शैल जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब द्वारा पर्व पूजन, पर्व संदेश के साथ-साथ पूर्व संध्या पर विशिष्ट उद्बोधन, शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में डाक टिकट का विमोचन, सायंकाल दीपज्योति यात्रा के साथ सम्पन्न हुए दीपयज्ञ सभी कार्यक्रमों का ऑनलाइन प्रसारण किया गया। लाखों लोग इनसे लाभान्वित हुए।

श्रद्धेया शैल जीजी का संदेश

गायत्री सिद्ध कैसे हो ?

मंत्र जप गायत्री साधना का कलेवर मात्र है। सिद्धियाँ तब मिलती हैं जब गायत्री को जीवन में उतारने की साधना की जाय। इसके लिए उपासना के माध्यम से बाँसुरी की तरह अपने भीतर की गाठें खोलकर पोला बन जाना होता है, जिससे इष्ट के स्वर निकल सकें। अपनी मलिनताओं को धोने के लिए दुर्गुणों को दूर कर अंतःकरण को निर्मल बनाने की साधना करनी होती है, जिसमें भगवान प्रतिष्ठित हो सकें। जिस समाज ने हमें बनाया उसके लिए सबकुछ अर्पण करने की आराधना करनी होती है।

गायत्री तब सिद्ध होती है जब दमिश्क के मोची अली बिन मुफिक की तरह दुःखी मानवता की सेवा में ईश्वर की आराधना दिखाई देने लगे। हज यात्रा समाप्त हो जाने के बाद अब्दुल्ला बिन मुबारक ने दो फरिश्तों को आपस में यह बात करते सुना कि हज करने 40 लाख लोग आए थे, लेकिन हज क़ुबूल केवल अली बिन मुफिक का हुआ।

अब्दुल्ला बिन मुबारक को ढूँढ़ने पर पता चला कि वह तो अकाल पीड़ितों की वेदना देखकर अपनी हज यात्रा अधूरी छोड़कर लौट गया था। उसने अपनी जीवन भर की कमाई 700 देहरम उनकी सेवा में लगा दी थी।

"यदि सारे भारतीय एक साथ तीन घण्टे तक गायत्री महामंत्र का जप कर लें तो उससे जो शक्ति उत्पन्न होगी वह 6000 खरब मेगावॉट के बराबर होगी। वह 1000 परमाणु बमों की शक्ति के बराबर होगी। इतनी बड़ी शक्ति हमारे पास है, लेकिन हमारी स्थिति ऐसी है जैसे घर में गढ़ा खजाना गढ़ा हो और उसे ढूँढ़ने के लिए कोई दर-दर भटक रहा हो। - श्रद्धेया शैल जीजी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा -

गायत्री और गंगा-दो विभूतियाँ

आज धरा की दो विभूतियाँ-गायत्री और गंगा के अवतरण का पर्व है। इन धरोहरों की विशिष्टताओं को समझने की आवश्यकता है। गायत्री से मनुष्य में देवत्व का उदय होता है और गंगा धरा पर स्वर्ग का अवतरण करने वाली है। गायत्री है तो सद्ज्ञान है, सत्कर्म है। गंगा है तो समृद्धि है, संस्कृति है।

कर्मकाण्ड ही पर्याप्त नहीं, तत्त्वदर्शन भी समझें

गायत्री राष्ट्र-निर्माण का, राष्ट्र के उत्थान का मंत्र है। संसार को नए सिरे से बनाना हो तो गायत्री से बढ़कर कुछ नहीं है। गायत्री केवल कर्मकाण्ड नहीं, जीवन के उत्थान से सधती है। गायत्री की सिद्धि के लिए उसके आयाम को समझना होगा। आप जप कर रहे हैं और जीवन में परिवर्तन नहीं हो रहा तो उसका कारण गायत्री के तत्त्वदर्शन को नहीं समझ पाना ही है।

जिनके चरित्र और चिन्तन पावन है, वे ही गायत्री का सही लाभ उठा पाते हैं। गायत्री साधक को गायत्री उपासना के साथ अपने चरित्र, चिन्तन और व्यवहार की विकृतियों को दूर करने की साधना भी करनी पड़ती है।

पूर्व संध्या के उद्गार

श्री शिवप्रसाद मिश्रा, पूर्व व्यवस्थापक

जो गायत्री जपता है उससे अवांछनीयताएँ स्वतः दूर होती जाती हैं। साबुन का स्वभाव मैल धोना है, मंजन का दाँत साफ करना, वैसे ही गायत्री अभ्यांतर विकारों को नष्ट कर मनुष्य में देवत्व का उदय करती जाती है।

डॉ. ओ.पी. शर्मा, जोन समन्वयक

गायत्री परिवार परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी की आत्मा का विस्तार है। हम जो कुछ भी हैं वह उन्हीं के तप और पुण्य के अंश के आरोपण का प्रभाव हैं।

परम पूज्य गुरुदेव की आत्मकथा 'हमारी वसीयत और विरासत' उनके शिष्यों की गीता, हम सबकी पथ पाथेय है। हमारा समर्पण कैसा होना चाहिए, यह जानना हो तो हमें यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

10,000 शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन लगाने का लक्ष्य है, हर व्यक्ति लगाये 100 वृक्ष

धरा पर स्वर्ग का अवतरण, समृद्धि और कल्याण सब प्रकृति के कल्याण से ही संभव है। धरती को स्वर्ग बनाने वाली गंगा आज स्वयं बेहद प्रदूषित हो गई है। आज उनके उद्धारक भगीरथों की तलाश है।

प्रकृति के शोधन और वातावरण के परिष्कार के लिए हमें वृक्षगंगा अभियान को गति देनी होगी। शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में 10,000 शान्तिकुञ्ज स्मृति उपवनों के निर्माण का लक्ष्य रखा गया है। आज के दिन हम सबको एक वर्ष में कम से कम 100 वृक्ष लगाने का संकल्प लेना चाहिए।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.6.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23